नेहरू बाल पुस्तकालय

सात सूरज सत्तावन तारे

सूर्यनाथ सिंह

चित्र

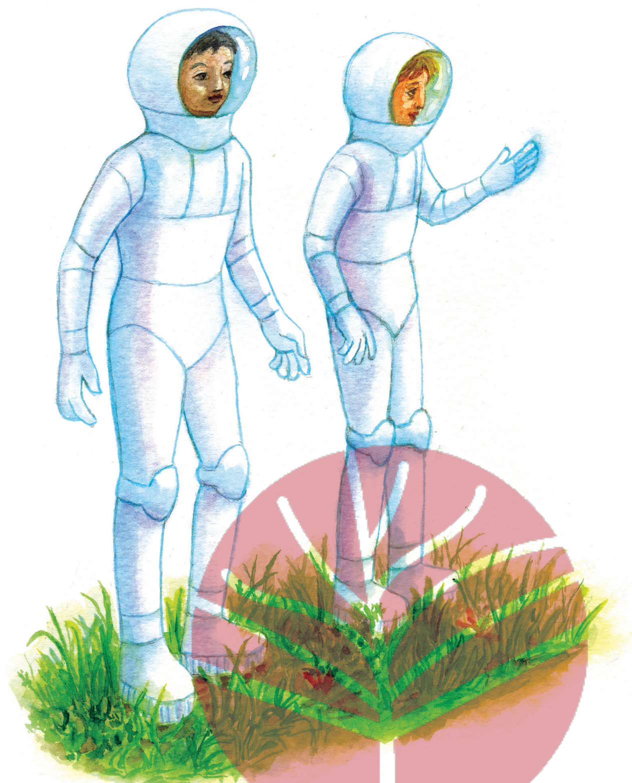
मिष्टुनी चौधरी



nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

10 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रहा है।



ISBN 978-81-237-6934-9

पहला संस्करण : 2013

दूसरी आवृत्ति : 2019 (*शक* 1940)

Saat Suraj Sattavan Tare *(Hindi Original)*

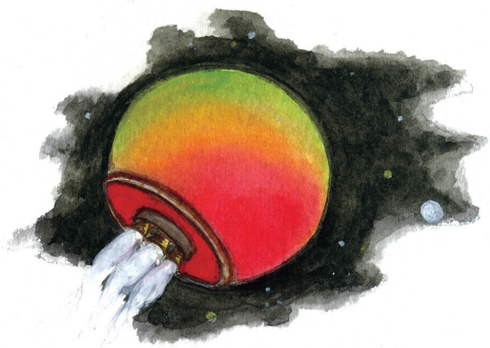
₹ 135.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फ़ेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

क्रम







मस्ती में अपहरण

आज आकाश और मार्था मस्ती के मूड में थे। योजना आकाश ने बनाई थी। मार्था को भी आकाश की शरारतों में मज़ा आता है, इसलिए वह कब उसे इस योजना से रोकने वाली थी! तय हुआ था कि वे दोनों कंट्रोल रूम के राडार को चकमा देंगे और चुपके से प्ले ग्राउंड रेडियस से बाहर निकल जाएँगे। हालाँकि मार्था ने पहले शंका ज़ाहिर की थी कि ऐसा करना संभव नहीं होगा। मगर आकाश ने तकनीकी उपाय समझाए तो उसे विश्वास हो गया कि वे ऐसा कर पाएँगे।

मार्था को यह सोच कर बहुत मज़ा आ रहा था कि आज वह कुछ नई जगहें देख पाएगी। आज तक उसने प्ले ग्राउंड रेडियस के बाहर की दुनिया देखी ही नहीं थी। बस सुना था कि दूर-दूर तक ऊँचे पहाड़ हैं, पानी के सोते हैं, और अब वहाँ पर फलदार पेड़ उगाने की भी योजना है; मगर उधर का इलाका कैसा है, कभी देखा ही नहीं था।

शाम होने वाली थी। सारे बच्चे खेलने के लिए घर से बाहर निकले। आकाश ने अपना टॉय प्लेन निकाला। मार्था भी उसके साथ बैठ गई। दो चक्कर काटने के बाद आकाश ने प्लेन का रुख सीधा पश्चिम दिशा की तरफ़ करके गति बढ़ा दी।

पूरब की तरफ़ रिहायशी कॉलोनी है। उत्तर की तरफ़ दूर-दूर तक रिएक्टर और पॉवर प्लांट के परिसर हैं। दक्षिण की तरफ़ नई परियोजनाओं पर काम चल रहा है। वे सब इलाके उनके देखे हुए हैं। वे सारी मशीनों से परिचित हैं। पश्चिम की तरफ़ हरा-भरा इलाका है। उधर पर्यटन को ध्यान में रखकर अगले साल से होटल और बहुत सारे मनोरंजन स्थल बनने शुरू हो जाएँगे। सुना है, दो-तीन हज़ार मील आगे जाने पर चीन ने भी अपनी बस्तियाँ बसानी शुरू कर दी हैं। लेकिन इस टॉय प्लेन से वहाँ तक जाना संभव नहीं है।

यही सब सोचकर मार्था और आकाश ने तय किया था कि प्ले ग्राउंड रेडियस से कुछ दूर आगे जाकर, जहाँ नदी-पहाड़ मिलेगा, वहीं वे अपना प्लेन उतारेंगे और कुछ देर मस्ती करके वापस लौट आएँगे।

प्लेन जैसे-जैसे तय प्ले ग्राउंड रेडियस की सीमा की तरफ़ बढ़ने लगा, उसमें लाल बत्ती जल गई और सुरक्षा की घंटी बजने लगी। मगर आकाश और मार्था को कहाँ उसकी परवाह थी। उन्होंने प्लेन की गति और बढ़ा दी। अब प्लेन में आवाज़ गूँजने लगी, ‘‘प्लेन को वापस लाओ! प्लेन को वापस मोड़ो! नहीं तो की-पैड लॉक हो जाएगा!’’ मगर आकाश ने उसकी परवाह नहीं की। वह जानता था कि रेडियस के बाहर जाने पर प्लेन कण्ट्रोल रूम से नियंत्रित होना शुरू हो जाएगा। वे कुछ नहीं कर पाएँगे। प्लेन को कण्ट्रोल रूम वाले वापस बुलाकर उतार लेंगे। इसलिए उसने कई दिन तक अध्ययन करने के बाद की-पैड की सेटिंग बदल दी थी। अब कण्ट्रोल रूम को यह तो पता रहेगा कि आकाश का प्लेन प्ले ग्राउंड रेडियस से बाहर चला गया है, मगर वहाँ बैठे लोग उसे उतार नहीं पाएँगे।

आकाश की योजना सफल रही। वे प्ले ग्राउंड रेडियस से बाहर चले गए। मार्था अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर खुशी से चिल्लाई, ‘‘हुर्रेऽऽऽ!!’’ आकाश ने भी अपना बायाँ हाथ ऊपर उठा कर उसे ताली दी।

अब वे दोनों एक नई दुनिया में थे। ऐसी दुनिया, जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा था। वे जानते थे कि जैसे ही वे सुरक्षा घेरे से बाहर निकलेंगे निगरानी दस्ते का हेलीकॉप्टर उन्हें तलाशने निकल पड़ेगा। इसलिए उन्होंने तय किया था कि वे बस ऊपर-ऊपर से इस नई दुनिया को देखकर जल्दी से वापस लौट आएँगे।

इधर काफ़ी हरियाली थी। उन्हें नीचे पहाड़ियों के बीच पानी का एक सोता बहता दिखाई दिया। मार्था बहुत खुश हुई। वह ज़िद करने लगी कि प्लेन नीचे उतारो, मगर आकाश ऐसा करने को तैयार नहीं था। उसे डर था कि इस बीच निगरानी दस्ता आ पहुँचा तो सारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा। मगर मार्था का तर्क था कि तब की तब देखेंगे! सुरक्षा घेरा तोड़ते वक्त नहीं डरे तो अब निगरानी दस्ते से क्या डरना!

तभी आकाश को नीचे पहाड़ियों के बीच घनी झाड़ियों की आड़ में कोई अद्र्ध गोलाकार विशाल कछुआनुमा चीज़ दिखाई दी। उससे लाल-हरी रोशनी निकल रही थी। आकाश ने मार्था को दिखाया। वह भी हैरानी से उसे देखती रही। दोनों ने तय किया कि पास चलकर देखते हैं। आकाश ने समतल ज़मीन देखकर प्लेन को नीचे उतार दिया।

वे दोनों प्लेन को चालू हालत में ही खड़ा करके उस कछुआनुमा गोल-सी चीज़ की तरफ़ बढ़ने लगे। ‘‘वह कोई मशीन लगती है! हो सकता है, सुरक्षा व्यवस्था के लिए यहाँ लगाई गई हो और इसके बारे में हमें पता न हो।’’ मार्था ने कहा।

“हो सकता है!...मगर हमारे सिक्योरिटी प्लान के नक्शे में कंप्यूटर पर ऐसी कोई मशीन मुझे देखने को नहीं मिली!” आकाश ने कहा।

वे मशीन के पास पहुँचने ही वाले थे कि उन्हें बाईं तरफ़ की पहाड़ी से अपनी ओर आता हुआ एक आदमी दिखाई दिया। बिलकुल वैसे ही स्पेस सूट में जैसा यहाँ के लोग पहनते हैं। बंद हेलमेट में उसका चेहरा साफ़ नहीं पहचाना जा सकता था। इसलिए आकाश और मार्था ने सोचा कि वह यहीं का बाशिंदा है, लेकिन नज़दीक आते ही थोड़ा रुककर उसने अपनी कलाई घड़ी में कुछ किया और उसका आकार काफ़ी बढ़ गया। पेड़-पौधों और पहाड़ियों की ऊँचाई बढ़ गई। ...तो क्या यह कोई जादूगर है!

मार्था ने कुहनी मारकर आकाश को इशारे से अपने छोटे हो गए आकार के बारे में बताया। वे अचानक काफ़ी छोटे हो गए थे। उनकी लंबाई तीन-चार इंच से ज़्यादा नहीं रही होगी। बिलकुल प्लास्टिक के गुड्डे-गुड़ियों की तरह। अब आकाश की समझ में आया कि सामने से आ रहे व्यक्ति और आसपास के पेड़-पौधों का आकार नहीं बढ़ा है, बल्कि उन्हीं दोनों का आकार काफ़ी छोटा हो गया है। वे हैरानी से उस व्यक्ति को पास आता देख रहे थे।

वह आया और उन दोनों को उठाकर उसने अपनी जैकेट की ऊपरी जेब में रख लिया। उसने अपनी कलाई घड़ी में कुछ किया तो सामने खड़ी कछुआनुमा मशीन में हरकत शुरू हो गई। उसके खोल में लगा दरवाज़ा सरककर खुल गया। वह व्यक्ति उन दोनों को लेकर उस मशीन के भीतर बैठ गया। दरवाज़ा बंद हुआ और वह कछुआ उड़ चला।

उस व्यक्ति ने उन दोनों को जेब से निकालकर एक किनारे पर बनी डैश-बोर्डनुमा जगह पर रख दिया। फिर उन दोनों की आँखों में गौर से देखा और मशीन से जुड़े दो तार निकालकर उनकी पिन अपने हेलमेट में खोंस दी। पता नहीं किससे कुछ बातें कीं और उस कछुआनुमा मशीन को चलाने लगा। आकाश और मार्था ने सामने लगे काँच से बाहर झाँका। वे बादलों के ऊपर पहुँच चुके थे।

विमान चला रहे व्यक्ति ने एक बार फिर अपनी कलाई घड़ी में कुछ किया और नीचे की तरफ़ झाँककर देखने के बाद आश्वस्त होकर विमान चलाने लगा।

आकाश और मार्था ने विमान की खिड़की से नीचे झाँककर देखा। उनके घरों की सारी बत्तियाँ गुल हो गई थीं। उन्हें हैरानी हुई कि जो बत्तियाँ कभी बंद नहीं होतीं, वे अचानक बंद कैसे हो गईं। वे समझ गए कि ज़रूर विमान चला रहे इस जादूगर जैसे आदमी ने कुछ खेल किया है, मगर वे इस बारे में आपस में न तो कुछ बातचीत ही कर पाए और न ही विमान चला रहे आदमी से कुछ पूछ ही पाए। डर के मारे वे तो बस चुप्पी लगाए बैठे रहे।

“मस्ती महँगी पड़ गई आकू!” मार्था ने आखिर डरते हुए रुआँसे स्वर में कहा।

“लगता है, हम किडनैप हो गए हैं!” आकाश ने कहा।



“हूँ। अब क्या करेंगे?” मार्था ने कहा।

आकाश ने मुँह पर उँगली रखकर उसे चुप रहने को कहा।

दोनों चुपचाप काँच के बाहर नज़रें टिकाए रहे। अब बादल नहीं दिखाई दे रहे थे। कभी अचानक रात हो जाती तो कुछ देर बाद ही उजाला हो जाता, जैसे कोई ट्रेन बार-बार सुरंग से होकर गुज़रती है। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है।



तभी उस आदमी की आवाज़ सुनाई दी, “तुम दोनों क्या करने जा रहे थे इस यान के पास?’’

आकाश और मार्था ने उस आदमी की तरफ़ देखा, फिर हैरानी से एक-दूसरे की ओर। उन्हें हैरानी हो रही थी कि यह आदमी उनकी भाषा बोल रहा है। ‘‘आखिर है कौन! और हमें लेकर कहाँ जा रहा है!’’

“कौन हैं आप, और कहाँ ले जा रहे हैं हमें?’’ आकाश ने डरते-डरते पूछा।

“अभी कुछ देर में पता चल जाएगा। ...मगर मैंने पूछा, क्या करने आए थे तुम हमारे यान के पास?’’ उस आदमी ने पूछा।

“हम तो खेलते हुए इधर आ गए थे। देखा कि यह मशीन पहाड़ियों के बीच खड़ी है तो जिज्ञासा हुई। फिर हमने अपना प्लेन नीचे उतार लिया। कोई गलत इरादा नहीं था! विश्वास कीजिए हमारा।’’ इस बार मार्था ने जवाब दिया।

आकाश ने अनुभव किया कि उन दोनों का आकार भले छोटा हो गया है, आवाज़ बिलकुल नहीं बदली है। उनमें अब भी पहले जैसी खनक है।

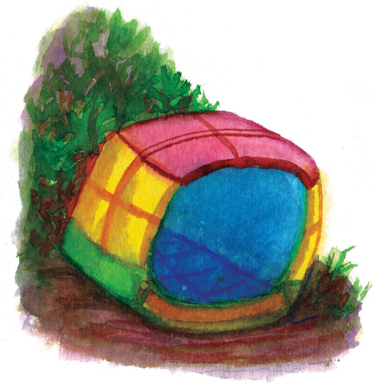
“हूँ! कोई हथियार तो नहीं है तुम्हारे पास?’’ विमान चला रहे व्यक्ति ने पूछा।

“नहीं! बिलकुल नहीं!! ...चाहें तो तलाशी ले लीजिए!’’ आकाश ने कहा।

“ज़रूरत नहीं है! होगा भी तो लेज़र बीम से नाकाम हो गया होगा! मुझे तलाशी लेने की ज़रूरत नहीं है!’’ उस आदमी ने हँसते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर आकाश और मार्था डर गए। कुछ देर सन्नाटा रहा। काँच की खिड़की से बाहर देखते रहे। फिर मार्था ने डरते हुए पूछा, “लेकिन आप हमें लेकर कहाँ जा रहे हैं?’’

“अभी पता चल जाएगा! चुपचाप बैठे रहो!’’ उस आदमी ने जवाब दिया।



सतरंगी पहाड़ और ऐरोस्टेट की गुफ़ा

उनका विमान एक घाटी में उतरा। उस वक्त शायद शाम होने वाली थी। क्या पता सुबह हो रही हो। ठीक-ठीक कह पाना मुश्किल था। सूरज कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। शायद पहाड़ों के पीछे छिप गया था या उधर से निकल रहा था। बस उसकी उजास फैली थी। देखकर अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि किस पहाड़ के पीछे सूरज छिपा है। आकाश और मार्था विमान की खिड़की से बाहर झाँक रहे थे। चारों ओर ऊँचे पहाड़ और उन पर सीढ़ीदार खेत दिख रहे थे। उनमें तरह-तरह की फ़सलें और फलदार पेड़ लगे थे।

विमान चलाकर ले आया आदमी अब अपने जूते बदल रहा था। मार्था और आकाश समझ नहीं पाए कि वह ऐसा क्यों कर रहा है। मार्था ने खिड़की से बाहर देखा। दूर खड़ा हुआ एक आदमी हरी बत्ती हिलाकर कुछ इशारा कर रहा था। मार्था ने आकाश को कुहनी मारकर उस तरफ़ दिखाया। आकाश ने उधर देखा और मार्था को चुप रहने का इशारा किया।

विमान का इंजन बंद हुआ तो उसका दरवाज़ा अपने आप खुल गया। अब विमान चलाकर ले आए व्यक्ति ने आकाश और मार्था को डैश-बोर्ड से उठाकर पहले की तरह अपनी जैकेट की जेब में रख लिया और विमान से उतरकर आगे बढ़ने लगा।

मार्था और आकाश अचरज से बाहर का दृश्य देख रहे थे। साल भर पहले जब वे पृथ्वी पर गए थे, तब विभिन्न देशों की यात्रा करते हुए उन्होंने बहुत सारे पहाड़ देखे थे। कुछ बर्फ़ से ढके पहाड़ तो कुछ निपट पथरीले, मगर उनपर कोई पेड़-पौधा नहीं। हाँ! ज़्यादातर जगहों पर हरे-भरे पहाड़ थे। उनपर भी इसी तरह के सीढ़ीदार खेत थे। उनमें तरह-तरह के अनाज और फल उगाए जाते थे। इसलिए आकाश को एक बार को भ्रम हुआ कि कहीं वे पृथ्वी पर तो नहीं आ गए!



लेकिन इन पहाड़ों के रंग पृथ्वी के पहाड़ों से बिलकुल मेल नहीं खाते थे। जिधर सूरज था, उधर के पहाड़ों का रंग काला था। उसके सामने के पहाड़ सुनहरे रंग के थे। फिर कुछ पहाड़ों का रंग हरा और कुछ का केसरिया था और किसी पहाड़ की चोटी पर चमकीली नीली आभा।

आकाश और मार्था ऐसे सतरंगे पहाड़ पहली बार देख रहे थे।

अब विमान चालक हवा भरे कपड़े के गुब्बारेनुमा घर के सामने था। जैसे पृथ्वी पर मेलों में बच्चों के उछलने के लिए मिकी-माउस वाले गुब्बारे लगाए जाते हैं, कुछ उसी तरह का घर। उस घर के मोटे कपड़े से बने अर्ध गोलाकार दरवाज़े से कुछ विचित्र किस्म की लाल-नीली-पीली रोशनी निकल रही थी।

वह व्यक्ति दरवाज़े से अंदर घुसकर एक छोटे से कमरे में पहुँचा। वह कमरा भी मोटे कपड़े में हवा भरकर तैयार किया गया था। उस व्यक्ति ने आकाश और मार्था को अपनी जेब से निकाल कर कमरे में रखी एक ऊँची गद्दीदार कुर्सी पर खड़ा कर दिया। तभी कमरे की छत पर ऐरोस्टेट बने गोलाकार में लगी बत्तियों से तरह-तरह की मद्धिम किरणें फूट पड़ीं। वे किरणें आकाश और मार्था के ऊपर पड़ रही थीं।

मार्था ने कुहनी मारकर आँख के इशारे से कुछ कहा। आकाश ने कमरे को गौर से देखा और फुसफुसाकर मार्था के कान में कहा, "ऐरोस्टेट से बना है। पूरी तरह कंप्यूटराइज़्ड।" मार्था ने गर्दन हिलाकर सहमति जताई। इस तरह की किरणों से वे अपरिचित नहीं थे। वे समझ रहे थे कि उन्हें डी-रेडिएट किया जा रहा है। यानी उनके कपड़ों पर चिपके रेडियोधर्मी कणों को निष्क्रिय किया जा रहा है।

अब उस व्यक्ति की आवाज़ थी, "अपने जूते उतार लो!"

आकाश और मार्था समझ नहीं पाए कि वह ऐसा क्यों कह रहा है। आकाश ने पूछा, "क्यों?"

"इसलिए कि ये जूते पहनकर ज़मीन पर चलोगे तो उछलने लगोगे!" उस व्यक्ति ने कहा।

आकाश और मार्था को समझते देर नहीं लगी। गुरुत्वाकर्षण का चक्कर! साल भर पहले जब वे पृथ्वी पर गए थे, तब भी उन्हें दूसरे जूते पहनने पड़े थे।

दोनों ने फटाफट जूते उतार दिए।

उन्हें कुर्सी से उतारने के बाद विमान चलाकर लाए व्यक्ति ने अपनी कलाई घड़ी में कुछ किया तो आकाश और मार्था अपने वास्तविक आकार में आ गए। अपने को असली आकार में पाकर उन्हें बहुत खुशी हुई। अभी तक उन्हें लग रहा था कि इसी तरह चूहे के आकार में ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ेगी। खुद को असली आकार में देखा तो उनके मुँह से स्वाभाविक रूप से एक साथ निकला, "थैंक यू अंकल!"

वह व्यक्ति मुसकराया। फिर इशारे से दूसरे कमरे की तरफ़ चलने को कहा। ऐरोस्टेट की गुफ़ा से निकलकर वे पत्थरों की एक गुफ़ा में पहुँच गए। उस कमरे और वहाँ पर रखी चीज़ों को देखकर साफ़ समझा जा सकता था कि किसी पहाड़ के भीतरी हिस्से को काटकर उसे बनाया गया है। वहाँ के पत्थरों को उनकी जड़ से उखाड़े बगैर तराशकर कुर्सियाँ, सोफे, टेबल वगैरह का रूप दिया गया था। जहाँ

ज़रूरत नहीं थी, वहाँ पत्थरों को अनगढ़ रूप में ही छोड़ दिया गया था। यह था कलाकारी का उत्कृष्ट नमूना!

आकाश और मार्था उस कमरे को और वहाँ पर रखी एक-एक चीज़ को गौर से देख रहे थे कि तभी उन्हें यहाँ लाए व्यक्ति की आवाज़ सुनाई दी, "अब तुम अपने स्पेस सूट उतार सकते हो!'' फिर वह अपना स्पेस सूट उतारने लगा।

स्पेस सूट उतारने के बाद उस आदमी के चेहरे को आसानी से पढ़ा जा सकता था। औसत कद, चपटा चेहरा, छोटी सिकुड़ी हुई आँखें, मोटी गर्दन, जैसी कि आमतौर पर अधिक ठंडे इलाकों में रहने वाले लोगों के होते हैं। आकाश और मार्था उसकी एक-एक हरकत को गौर से देख रहे थे। तभी उस व्यक्ति ने इशारे से एक बार फिर स्पेस सूट उतारने को कहा।

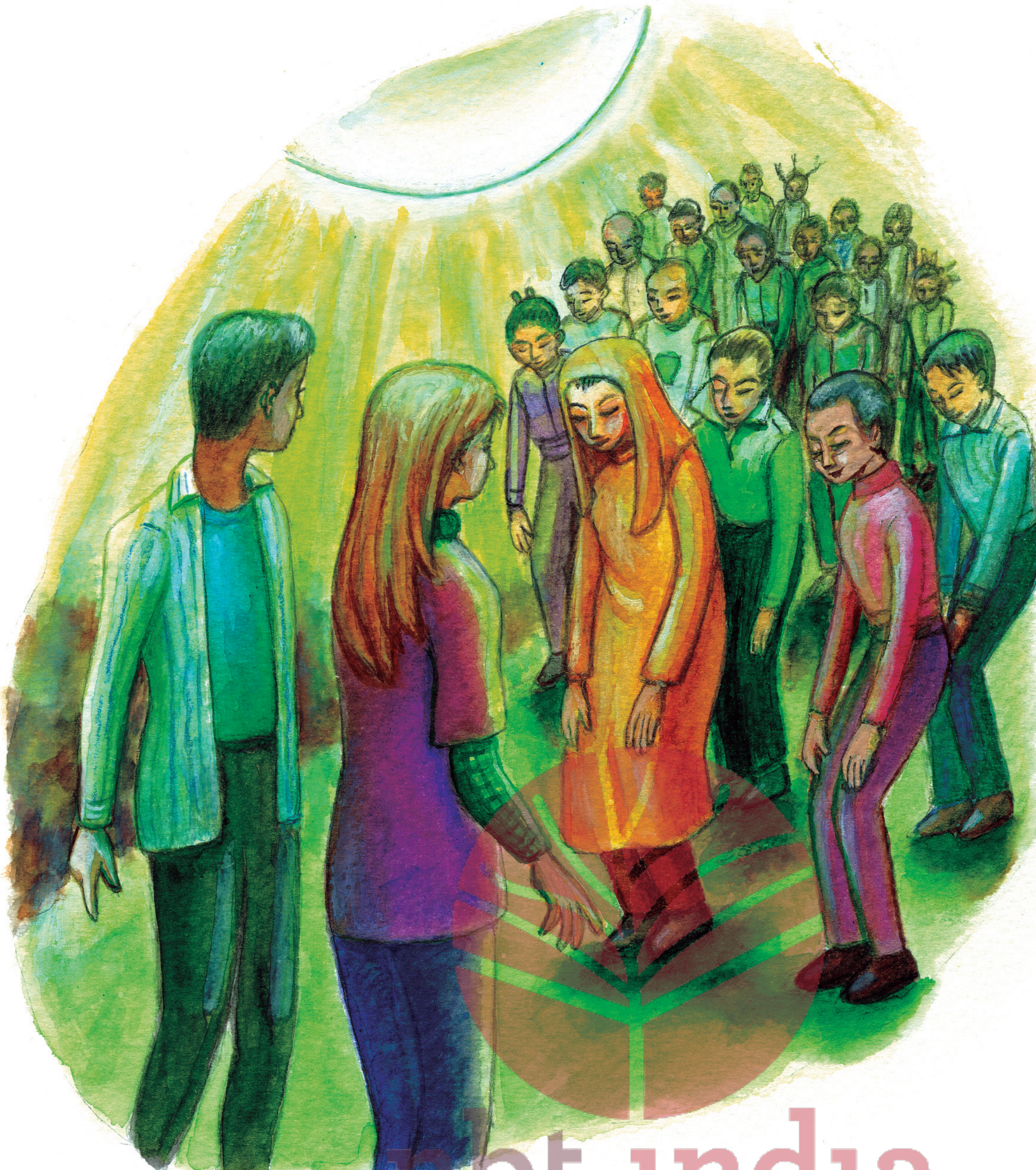
मार्था और आकाश ने अपने सूट उतार दिए। उस व्यक्ति ने इशारे से उन्हें आलमारी में रखने को कहा। जब वे अपने स्पेस सूट आलमारी में रख चुके तो उस आदमी ने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, "मैं सूँसीं! मुझे अपना दोस्त समझो!''

आकाश और मार्था ने भी बारी-बारी से अपने हाथ उसके हाथों में देकर अपना परिचय दिया। फिर सूँसीं उन्हें एक दूसरे कमरे में ले गया। वहाँ पहले से कई लोग मौजूद थे। वे सूँसीं, मार्था और आकाश को देखकर झुके और दोनों हाथ अपने घुटनों पर रखकर उन्होंने एक साथ कुछ कहा। सूँसीं ने भी वैसा ही किया। मार्था और आकाश समझ गए कि यह उनके अभिवादन का तरीका है। इसलिए उन्होंने भी झुककर अपने दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रख दिए। अभिवादन में कहे गए शब्द वे बोल नहीं पाए, क्योंकि ठीक से समझ नहीं पाए थे।

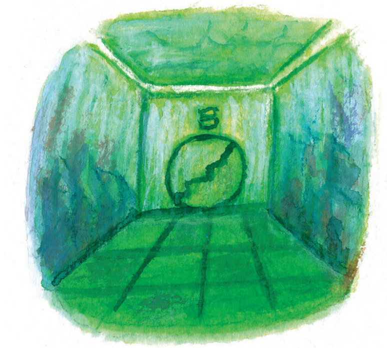
फिर सबने मार्था और आकाश की आँखों में बारी-बारी से देखा। यह मार्था और आकाश को हैरान करने वाली घटना थी। मगर उन्होंने सोचा कि शायद यह नए मेहमानों के स्वागत का उनका तरीका होगा।

फिर दो लोग एक बड़ी-सी फ्रिजनुमा मशीन में से खाने-पीने की कुछ चीज़ें निकालकर सबको परोसने लगे। केक और मफिन, चॉकलेट जैसी चीज़ें और रंगीन शर्बत। जब तक सबको खाना परोसा नहीं गया, लोग अपने हाथों में प्लेटें लिए खड़े रहे। फिर सबने लगभग एक स्वर में कहा, ''स्वागत है आप दोनों का हमारी इस धरती पर!'' आकाश और मार्था समझ गए कि यह उन दोनों के लिए कहा गया है।

भोजन समाप्त हुआ तो सूँसीं मार्था और आकाश को एक कमरे में ले गया, "यहाँ तुम दोनों आराम करो! कल फिर मिलेंगे! इस दीवार पर यह बटन लगा है। अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो इसे दबा देना। बाथरूम इधर है। वैसे थोड़ी देर में मिस्टर च्याऊँ यहाँ आएँगे। कोई ज़रूरत हो तो उन्हें बता देना!



कुछ जानना-समझना हो तो उनसे पूछ लेना!’’ फिर सूँसीं ने झुककर घुटनों पर हाथ रखे और चला गया।



रोशन दीवारें

सूँसीं के जाने के बाद आकाश बिस्तर पर लेट गया। मार्था से कहा, "लेट जाओ तुम भी! थक गए यार!"

"तुम तो यहाँ आकर ऐसे लेट गए जैसे रिश्तेदारी में आए हो। घबराहट से मेरी हालत खराब हो रही है और तुम्हें जैसे चिंता ही नहीं है। पता नहीं ये लोग कौन हैं! क्यों ले आए हैं यहाँ। तुम्हें तो जैसे इससे कोई फ़र्क ही नहीं पड़ता!" मार्था ने गुस्से में कहा।

"कर भी क्या सकते हैं। जो होगा देखेंगे। सोच-सोच के परेशान होने से भी क्या फायदा। सूँसीं बोल गया है, 'कल मिलेंगे।' मिल लेंगे कल!" आकाश ने बेपरवाह ढंग से कहा।

"हमें तो लालची लगते हैं ये। अपहरण करके लाए हैं हमारा। हमारे माता-पिता से फिरौती माँगेंगे। नहीं मिलेगी तो हमारी गर्दन उड़ाकर यहीं किसी पहाड़ के नीचे दफ़न कर देंगे।" मार्था का गुस्सा कुछ और बढ़ गया था। बोलते-बोलते साँसें तेज़ हो गई थीं।

आकाश हँसा, "कल्पना अच्छी चीज़ होती है! मगर अपने ही बारे में इतना बुरा सोचना ठीक नहीं है।"

''तुम तो चैन की नींद लो! मैं सोचती हूँ कुछ उपाय।" मार्था का गुस्सा कुछ और बढ़ गया।

आकाश ने अंदाज़ा लगा लिया कि अब मार्था के साथ देर तक मज़ाक के मूड में बात करना ठीक नहीं है। वह बिस्तर से उठा और मार्था का हाथ पकड़कर बिस्तर पर अपने पास बैठा लिया। उसे समझाते हुए कहा, "अपहरण वाली बात तो तुम अपने दिमाग से निकाल दो। अपहरण करने वाले इस तरह व्यवहार नहीं करते, जैसा ये हमारे साथ कर रहे हैं। जिस तरह समारोह करके सबने अपना परिचय दिया। हमें खाना खिलाया और मेहमान की तरह इतने सुविधाजनक कमरे में आराम करने को छोड़ गए, उससे तुम्हें नहीं लगता कि ये हमारी गर्दन नहीं कुछ और चाहते हैं?"

‘‘क्या चाहते हैं, यही तो सवाल है!’’ मार्था का गुस्सा कुछ कम हुआ।

‘‘असल बात तो कल ही पता चलेगी, मगर मेरा दिमाग कहता है कि यह कुछ दो ग्रहों की आपसी रंजिश का मामला है! ऐसे मामलों में पैसा और किसी की जान लेकर निपटारे नहीं होते!’’ आकाश ने समझाया।

मार्था की साँसें अब सामान्य हो गई थीं। चेहरे पर से तनाव की रेखाएँ मिट गई थीं। मगर बहुत सारे सवाल उसके मन में घुमड़ रहे थे। उसने कहा, ‘‘मगर हमने तो सुना था कि दूसरे ग्रहों पर एलियन रहते हैं। वे कुछ जादू जैसा करते हैं। रूप बदल लेते हैं। लड़ाकू होते हैं। बात-बात पर हमला कर देते हैं। उनका रूप-रंग अज़ीब होता है। ये तो बिलकुल हमसे मिलते-जुलते हैं। वैसा ही खाना-पीना, घर की बनावट, सोने-बैठने का तरीका और स्वागत-सत्कार भी! हमारी तरह ही ये स्पेस क्राफ्ट का इस्तेमाल भी करते हैं...! मुझे नहीं लगता, हम किसी दूसरे ग्रह पर आ गए हैं!’’

आकाश ने समझाया, ‘‘एलियन्स को तो हमने देखा नहीं। हमने अपनी कल्पना से उन्हें गढ़ा है। मगर जिन लोगों को हम देख रहे हैं, वे हकीकत में हैं। ज़रूरी तो नहीं कि दूसरे ग्रहों पर हम जैसे लोग न रहते हों। उनके रहन-सहन का तरीका हमसे अलग हो। वे तकनीक के मामले में हम जैसे न हों। हो सकता है, इन लोगों के पास हमसे भी उन्नत तकनीक हो। देखो, जहाँ भी मनुष्य के स्वभाव के लोग होंगे, वहाँ मानवीयता भी होगी। हर मनुष्य हिंसक और जादू-टोने में विश्वास करने वाला तो नहीं होता। हिंसा और जादू-टोना कमज़ोर और असभ्य लोगों के अस्त्र होते हैं। मनुष्य का मूल स्वभाव दया, क्षमा, सहनशीलता और रचनाशीलता का होता है। तुम्हारी माँ ने ही तो यह पाठ हमें पढ़ाया है, फिर भूल कैसे गई! बेवजह उलटी-सीधी बातें सोचकर भयभीत होने से कुछ हासिल नहीं होगा। इंतज़ार करो कल का, परसों का, नरसों का, तरसों का जब तक इनका असल मकसद पता नहीं चल जाता!’’

मार्था का भय कुछ कम हुआ। साँसें सामान्य हुईं। वह आकाश की चतुराई पर एक बार फिर मुग्ध हो उठी। उसने आकाश के कंधे पर सिर रखकर गहरी साँस ली और कहा, “मगर हमारे मम्मी-पापा को कैसे पता चलेगा कि हम इन लोगों की गिरफ़्त में हैं!’’

“उसकी चिंता भी हमारी नहीं है। वह सिरदर्दी भी इन लोगों की है। यही बताएँगे उन्हें।’’ आकाश ने कहा।

“मगर कब बताएँगे! वहाँ हमें तलाश करते हुए वे लोग कितना परेशान होंगे!’’ मार्था ने चिंता ज़ाहिर की।

“सबसे ज़्यादा तुम्हारी मम्मी परेशान होंगी। उन्हें लग रहा होगा कि मैं उनकी बेटी को कहीं भगा कर ले गया हूँ! लड़ रही होंगी मेरी मम्मी से!’’ आकाश ने मार्था का दिमाग दूसरे विषय की तरफ़ मोड़ते हुए मज़ाकिया लहजे में कहा।



मार्था ने आकाश से अलग होते हुए एक मुक्का उसकी पीठ पर जमा दिया, "तुम्हें तो हर वक्त मेरी मम्मी में बुराई नज़र आती है!"

"कहते हैं, सच कड़वा होता है! हो गई न तुम्हारी जबान भी कड़वी! मगर डरो मत, तुम्हारी मम्मी की बेटी को मैं कुछ होने नहीं दूँगा!" आकाश को फिर मज़ाक सूझा।

मार्था—मेरी मम्मी लड़ती हैं, तो तुम्हारी मम्मी कौन-सा अपनी जबान पर ताला लगाए रहती हैं।

आकाश—मगर यह मत भूलो कि मेरी मम्मी मुझसे ज़्यादा तुम्हें प्यार करती है!

मार्था—वही हाल मेरी मम्मी का भी है। तुम पर जान छिड़कती हैं!

आकाश को लगा कि मज़ाक में शुरू हुई बात तीखी बहस का रूप लेती जा रही है, तो उसने उसमें दिलचस्पी लेना बंद कर दिया। वह कमरे की छत की तरफ़ देखने लगा। मार्था ने देखा कि आकाश चुप्पी साध गया है, तो उसने कहा, "मैं बाथरूम से फ्रेश होकर आती हूँ।"

आकाश का ध्यान छत की तरफ़ था। मार्था के जवाब में उसने बस अपनी गरदन हिला दी। अचानक उसका ध्यान छत के किनारे की दीवारों की तरफ़ गया। चारों तरफ़ लगी एक चौड़ी पट्टी बल्ब की तरह जल रही थी। आकाश ने गौर से देखा, उसमें कोई बल्ब नहीं था। मगर पट्टी रौशन थी। जैसे रेडियम की पट्टी अंधेरे में रौशन होती है।

मार्था आकाश को पुकारते हुए बाथरूम से बाहर आ गई, "मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा है कि बाथरूम इस्तेमाल कैसे करें! ज़रा इधर आकर देखो तो सही!" आकाश ने जैसे उसकी बात अनसुनी कर दी। उसने इशारे से मार्था को छत की तरफ़ दिखाया, "यह देखो, लाइटिंग का बंदोबस्त हमसे कुछ अलग है।"

मार्था ने भी उस तरफ़ देखा। मगर दोनों समझ नहीं पाए कि इस तरह प्लास्टिक की प्लेटें रोशनी कैसे दे रही हैं। दीवारों पर कोई स्विच नहीं। बिजली के कनेक्शन का कोई पता नहीं।...

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। आकाश और मार्था कुछ सजग हुए। मार्था सहम-सी गई थी। तब आकाश ने हाथ के इशारे से उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "मैं देखता हूँ।" और जाकर दरवाज़ा खोल दिया।

सामने खड़े व्यक्ति ने मुसकान बिखेरते हुए कहा, "मैं च्याऊँ! पूछने आया था कि किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है! आराम से तो हैं आप लोग?"

आकाश ने गहरी साँस ली। आश्वस्त हुआ। मार्था के चेहरे पर से भी चिंता की रेखाएँ उड़ गईं। आकाश ने कहा, "वेलकम मिस्टर च्याऊँ! अंदर आइए!"

च्याऊँ अंदर आ गया। आकाश ने कहा, "तकलीफ़ तो कोई नहीं है! कुछ सवाल ज़रूर हैं!"

"पूछिए!" च्याऊँ ने कहा।

"हमें इस तरह यहाँ लाने का मकसद क्या है?'' मार्था ने पूछा।

"इसका जवाब मैं नहीं दे सकता। आपको अपनी सुविधाओं को लेकर कोई सवाल है, तो पूछिए!'' च्याऊँ कुछ रूखे स्वर में बोला।

"अच्छा, यह बताइए कि छत से लगी हुई इन पट्टियों में रोशनी की व्यवस्था कैसे की गई है?'' आकाश ने च्याऊँ की नाराज़गी दूर करने के मकसद से पूछा।

अब च्याऊँ सहज हो चुका था। उसने बताया, "ये सौर ऊर्जा से रोशनी फेंकती हैं। ये फाइबर पेस्ट से बनी डिजिटल पट्टियाँ हैं। इनमें ऊर्जा नाममात्र की खर्च होती है। ये एक टॉर्च के ड्राई सेल जितनी ऊर्जा से भी चल जाती हैं। ये कमरे में रोशनी कम होने पर अपने आप जल जाती हैं। अगर बंद करना हो, तो बस ताली बजा दीजिए, बंद हो जाएँगी। मगर फिर जलाने के लिए भी ताली बजानी पड़ेगी! इस तरह!'' उसने ताली बजा कर बताया। फिर बताना शुरू किया, "इन दीवारों पर भी वैसा ही फाइबर पेस्ट का डिजिटलाइज्ड प्लास्टर लगाया गया है। यह बदलते हुए मौसम के अनुरूप आपके शरीर के तापमान का अंदाज़ा लगाकर कमरे के तापमान को उसके अनुरूप रखता है। इसमें भी ऊर्जा की बहुत कम खपत होती है।''

आकाश और मार्था का ध्यान उन पट्टियों की तरफ़ लगा हुआ था। तभी च्याऊँ ने पूछा, "किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो बताएँ। भोजन का एक निर्धारित समय है। इसलिए वह नहीं मिल पाएगा। बाकी कुछ और खाने को मिल सकता है। कहें तो ला दूँ।''

मार्था ने कहा, "बिलकुल किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। हम लोग बड़े आराम से हैं। मगर यह तो बताते जाइए, यह बाथरूम कैसे इस्तेमाल करते हैं।''

च्याऊँ सीधे बाथरूम में घुस गया। पीछे-पीछे आकाश और मार्था भी गए। च्याऊँ ने उन्हें बताना शुरू किया, ''इसमें सेंसर लगे हैं। अगर आपको हाथ-मुँह धोना है, तो आप अपने दोनों हाथ इस केबिन में डाल दीजिए, अपने आप चल जाएगा। आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। वैसे ही अगर नहाना है, तो इस काँच के बक्से में खड़े हो जाइए। कुछ सैकेंड के बाद यह अपने आप चल जाएगा।''

आकाश और मार्था समझ गए तो च्याऊँ उन्हें गुडनाइट कहकर वापस चला गया।

आकाश और मार्था बातें करते-करते सो गए।



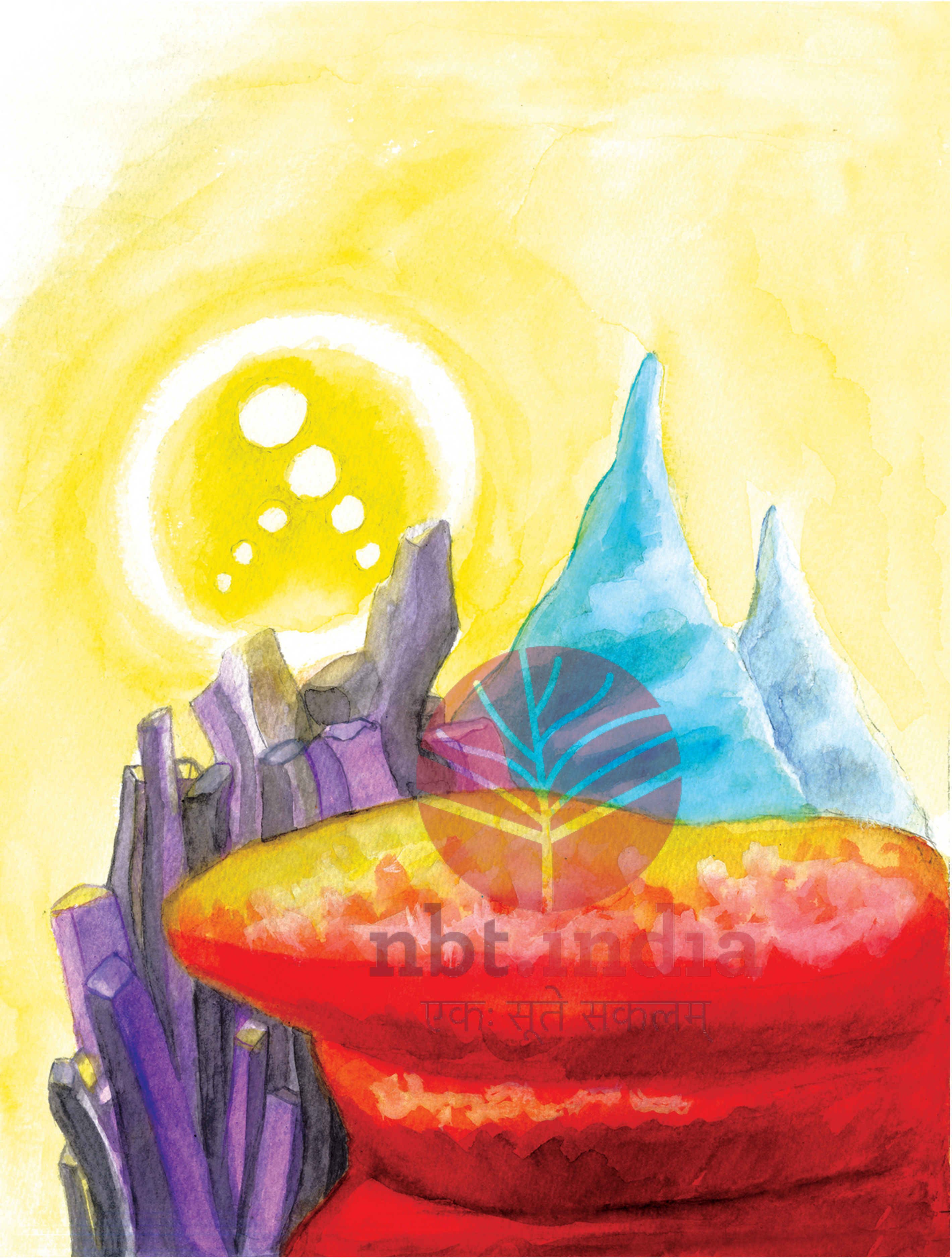


लेम्डा आकार का सूरज

सुबह पहले मार्था की नींद खुली। उसने खिड़की से बाहर देखा तो हैरान रह गई। देर तक देखती रही। फिर आकाश को झकझोर कर जगाया, "उठो! देखो आसमान में क्या विचित्र नज़ारा है!"

आकाश शायद और सोना चाहता था। मगर मार्था के झकझोरने और हैरत भरी आवाज़ में जगाने की वजह से उसकी नींद खुल गई। वह आँखें मलते हुए उठकर बैठ गया। मार्था ने खिड़की की तरफ़ दिखाया तो उसकी भी आँखें फटी की फटी रह गईं। आसमान में उलटे वाई यानी लेम्डा के आकार में सात सूरज चमक रहे थे। चार सूरज एक कतार में तिरछी लकीर की तरह और फिर ऊपर से दूसरे





सूरज से विपरीत दिशा में तीन सूरज। इस पूरे आकार के चारों तरफ़ रोशनी का एक गोल चक्र बना था। मानो किसी बच्चे ने लेम्डा की आकृति बनाकर गोले में कैद कर दिया हो।

आकाश और मार्था उन लेम्डा आकार के सूरज को ध्यान से देख रहे थे। उनकी संख्या सात होने के बावजूद गरमी अधिक नहीं थी। पहाड़ी इलाकों जैसा ठंडा, खुशनुमा मौसम था। आँखों में रोशनी की चमक भी ज़्यादा नहीं, पृथ्वी जैसी सामान्य ही पड़ रही थी। धुला हुआ आसमान और पर्वत चोटियाँ! चारों तरफ़ रंगबिरंगे फूल।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। आकाश ने उठकर दरवाज़ा खोला। च्याऊँ खड़ा था। उसने कहा, "फ्रेश हो लीजिए, कुछ देर में नाश्ते के लिए चलना होगा!" और चला गया।

आकाश ने मार्था की तरफ़ देखा, "दिन शुरू हो चुका है। तैयार हो जाओ!"

"कपड़े तो हैं नहीं! यही कपड़े पहनने होंगे! मैं तो नहीं नहा रही हूँ! तुम जाओ, नहा लो!" मार्था ने कहा।

आकाश बाथरूम में घुसा। उसे भरोसा था कि जब नहाने-धोने का इतना अच्छा इंतज़ाम है, तो कपड़े धोने का भी बंदोबस्त ज़रूर होगा। रात को ही च्याऊँ से इस बारे में पूछ लेना चाहिए था, मगर ध्यान नहीं रहा। उसने बाथरूम की एक-एक चीज़ को गौर से देखा। आखिर एक जगह ऐसी दिख गई, जिस पर कपड़ों के निशान बने थे।

आकाश ने सोचा, पहले इसमें अंडर गारमेंट डाल कर देखते हैं। ऐसा न हो कि सारे कपड़े डाल दें और सूखने के इंतज़ार में पूरे दिन बाथरूम में बैठे रहना पड़े। उसने अपना जांघिया और बनियान उस डिब्बेनुमा चीज़ में डाल दिए। कुछ सैकेंड बाद उस मशीन में घनघनाहट शुरू हो गई। आकाश वहीं खड़ा मशीन को काम करते देखता रहा। पाँच मिनट बीते होंगे कि उसके कपड़े बिलकुल तह लगे हुए दूसरी तरफ़ से निकल आए, जैसे प्रिंटर से प्रिंट किए हुए हलके गरम कागज़ निकलते हैं। वह हैरान रह गया।

उसने फटाफट अपने दूसरे कपड़े भी मशीन में डाल दिए। फिर नहाने के बक्से में जाकर खड़ा हो गया। कुछ सैकेंड बाद चारों तरफ़ से हलकी गरम भाप का झोंका उठा। फिर वैक्यूम क्लीनर की तरह चारों तरफ़ से उसके रोम-रोम को खोल देने वाली हवाओं का खिंचाव शुरू हो गया। मशीन रुक गई तो आकाश ने खुद को तरोताज़ा महसूस किया। बॉक्स का दरवाज़ा अपने आप खुल गया। वह बाहर निकला तो सहज ही उसके मुँह से निकला, "आदमी को ड्राई क्लीन करने का अच्छा तरीका है!" देखा तो उसके सामने बाकी कपड़े भी तह लगे हुए बाहर रखे थे।

वह धुले हुए कपड़े पहनकर बाहर निकला और मार्था को समझाया तो वह भी नहाने-धोने को उत्सुक हो उठी।



आकाश और मार्था नहा-धोकर तैयार हुए तो च्याऊँ उन्हें बुलाने आ पहुँचा। वे उसके साथ नाश्ते के लिए निकल गए।

आज वे किसी दूसरे हॉल में पहुँचे। जहाँ कल शाम को भोजन किया था, वह अलग जगह थी। हालाँकि कल की तरह ही वहाँ भी लोग जमा थे। इस बार महिलाओं और बच्चों की संख्या भी काफ़ी थी। आकाश और मार्था को देखकर सामूहिक स्वर उभरा, "गुड मॉर्निंग!" आकाश और मार्था ने भी वैसा ही किया।

आकाश और मार्था ने अंदाज़ा लगाया कि इन लोगों के यहाँ सब लोग सामूहिक रूप से खाते-पीते होंगे।

नाश्ते के बाद मार्था और आकाश को एक अलग कमरे में ले जाया गया। उनके साथ तीन पुरुष और दो महिलाएँ गईं। उनमें सूँसी भी था। बाकी लोग वापस चले गए।



आँख में स्कैनर

जिस कमरे में आकाश और मार्था को ले जाया गया, वह किसी कॉन्फ्रेंस रूम की तरह लग रहा था। हालाँकि छत पर एरोस्टेट का गोलाकार गुब्बारा टँगा हुआ था।

आकाश और मार्था गोलाकार मेज़ की एक तरफ़ लगी कुर्सियों पर बैठ गए। वे समझ रहे थे कि अब उनसे बातचीत का सिलसिला शुरू होने वाला है। हालाँकि मार्था कुछ सशंकित लग रही थी। आकाश ने उसकी मनःस्थिति ताड़ ली। उसने मार्था का हाथ दबाकर निश्चिंत रहने का इशारा किया।

सामने बैठे बूढ़े व्यक्ति ने अपना परिचय दिया, ‘‘मैं फंकी! जिस ग्रह से तुम लोग आए हो, वहाँ पैदा हुआ आखिरी नागरिक!’’

आकाश ने गर्दन हिलाई, चेहरे पर मुसकान बिखेरी और अपना परिचय दिया, “मैं आकाश! उस ग्रह पर पैदा होने वाला पहला नागरिक!’’

सामने बैठा व्यक्ति मुसकराया। फिर हाथ उठाकर मार्था की तरफ़ परिचय जानने की जिज्ञासा में इशारा किया।

“मैं मार्था! आकाश से साढ़े तीन महीने छोटी! उस ग्रह पर पैदा हुई दूसरी नागरिक!’’ मार्था ने कुछ हकलाते हुए जवाब दिया।

“कितनी उम्र हो गई है तुम्हारी?’’ आकाश की तरफ़ मुखातिब होकर फंकी ने पूछा।

“चौदह साल, आठ महीने!’’

“यानी मार्था की उम्र चौदह साल, साढ़े चार महीने है!’’ फंकी ने अपनी तरफ़ से गणना करके बता दिया। मार्था को जवाब देने की ज़रूरत नहीं थी। उसने बस स्वीकार भाव से गरदन हिला दी।

“कहाँ से आए हो तुम लोग स्यांदू पर?’’ फंकी ने सवाल ज़ारी रखा।





आकाश और मार्था इस सवाल पर चकित थे। "स्याँदू मतलब?" आकाश ने पूछा।

"जिस ग्रह पर तुम लोग रहते हो, उसका नाम है।"

"मगर उसे तो हम यूसिन कहते हैं!" मार्था ने कहा।

"वह नाम तुमने रखा होगा। हम तो उसे स्यांदू नाम से जानते हैं।" फंकी ने कहा। "...खैर, हमारा सवाल था, तुम कहाँ से आकर वहाँ बसे?"

"इस ब्रह्मांड में पृथ्वी नाम का एक ग्रह है। वहीं से हमारे माता-पिता आकर वहाँ बस गए। अभी पूरी तरह बसे नहीं हैं। बस रहे हैं।" आकाश ने कहा।

"वहाँ आकर बसने का तुम्हारा मकसद क्या है?" फंकी की बगल में बैठे सूँसी ने पूछा।

"क्या हम जान सकते हैं कि आप लोग हमारी भाषा कैसे बोल पा रहे हैं?" मार्था ने बीच में यह अलग तरह का सवाल पूछ लिया। थोड़ी देर को सन्नाटा छा गया। सामने बैठे हुए लोग एक-दूसरे को देखने लगे। मार्था ने सोचा कि शायद उसने गलत सवाल कर दिया है। "नहीं! मेरा मकसद आपके सवालों को टालना नहीं था! बस जिज्ञासावश पूछ लिया।" मार्था ने स्पष्ट किया।

सामने बैठी एक महिला मुसकराई। उसने कहा, "दरअसल, हमारी आँखों में लैंग्वेज स्कैनर है। हम जिस भी व्यक्ति की आँखों में झाँक लेंगे, हमारा दिमाग उसकी भाषा को स्कैन कर लेगा। फिर हम उसकी भाषा बोल और समझ सकते हैं। क्या तुम्हारे यहाँ यह तकनीक नहीं है?"

"नहीं! हम आपकी भाषा को समझ और बोल नहीं सकते।" आकाश ने कहा।

"कोई बात नहीं! हमने पूछा था कि उस ग्रह पर आकर बसने का तुम्हारा मकसद क्या है?" सूँसी ने अपना सवाल दोहराया।

"ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने की जिज्ञासा हमारे यहाँ बहुत पुरानी है। मगर अपने सौरमंडल से बाहर की दुनिया के बारे में पता लगाना मुश्किल बना रहा है। हमारे सौरमंडल में ऐसा एक भी ग्रह नहीं मिल पाया है, जिस पर जीवन हो या जीवन की संभावना हो। इसलिए जब आज से करीब पच्चीस साल पहले, यानी धरती के समय के अनुसार सन् दो हज़ार बयालीस में अमेरिकी संस्था नासा और भारतीय संस्था इसरो के संयुक्त प्रयास से तैयार यूसिन-वन नाम का अंतरिक्ष यान पहली बार उस ग्रह से टकराया और वहाँ जीवन की संभावनाएँ नज़र आईं, तो हमारे वैज्ञानिक दल की खुशी का ठिकाना न रहा। उस ग्रह का नाम भी रख दिया गया—यूसिन। यूसिन, यानी यूएस और इंडिया के संयुक्त प्रयास से खोजा गया ग्रह। यूसिन पर बसने का इरादा इस मकसद से किया गया कि यहाँ से ब्रह्मांड के दूसरे ग्रहों के बारे में जानकारी हासिल की जा सकेगी।" आकाश ने बताया।

"कैसे खोजा हमारे ग्रह को?" दूसरी महिला ने पूछा।

"लंबी कहानी है। उस खोज से जुड़े फुटेज देखकर और मार्था की मम्मी से उसकी कहानियाँ सुनकर उसके बारे में हमने जाना है। इस बारे में मार्था बेहतर तरीके से बता सकेगी।...मगर क्या हम जान सकते हैं कि आप लोगों ने उस ग्रह को छोड़कर यहाँ बसने का फैसला क्यों किया।" आकाश ने कहा।

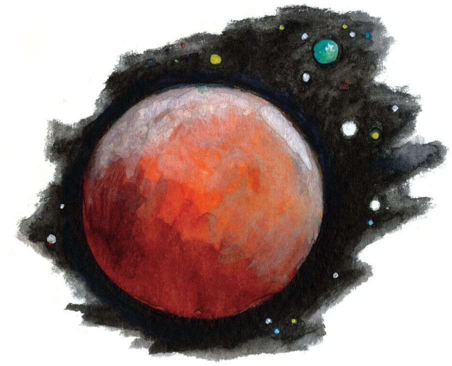
"वह सब बाद में बता देंगे। पहले तुमसे जानना चाहते हैं। जबसे तुम लोग स्यांदू, यानी यूसिन पर आए हो, हमारे लिए कुछ परेशानियाँ पैदा हो गई हैं। वैसे भी वह हमारी धरती है, तुम लोगों को इतनी आसानी से उस पर कब्ज़ा जमाते हुए हम देख नहीं सकते!" तीसरे आदमी ने कहा। उसकी आवाज़ में गुस्सा था।

सूँसी ने उसे इस तरह व्यवहार करने से रोका। फिर मार्था की तरफ़ मुखातिब होकर कहा, "बताओ, हमें उस खोज के बारे में!"

तीसरे आदमी की आँखों में गुस्सा देखकर मार्था कुछ डर गई थी। आकाश ने उसका हाथ दबाकर एक बार फिर उसे आश्वस्त किया। तब मार्था ने कहा, "क्या एक गिलास पानी मिल पाएगा?"

सूँसी ने शायद कोई घंटी बजाई या संकेत किया। एक आदमी गिलास में पानी लेकर हाज़िर हो गया। फिर एक आदमी एक बड़ी-सी केतली में चाय या कॉफी जैसा कोई गरम पदार्थ और कुछ गिलास लेकर हाज़िर हुआ। उसने सबको गिलासों में वह पदार्थ उँड़ेलकर दिया और वापस चला गया।

थोड़ी देर का विराम रहा।



अंधे ग्रह की खोज

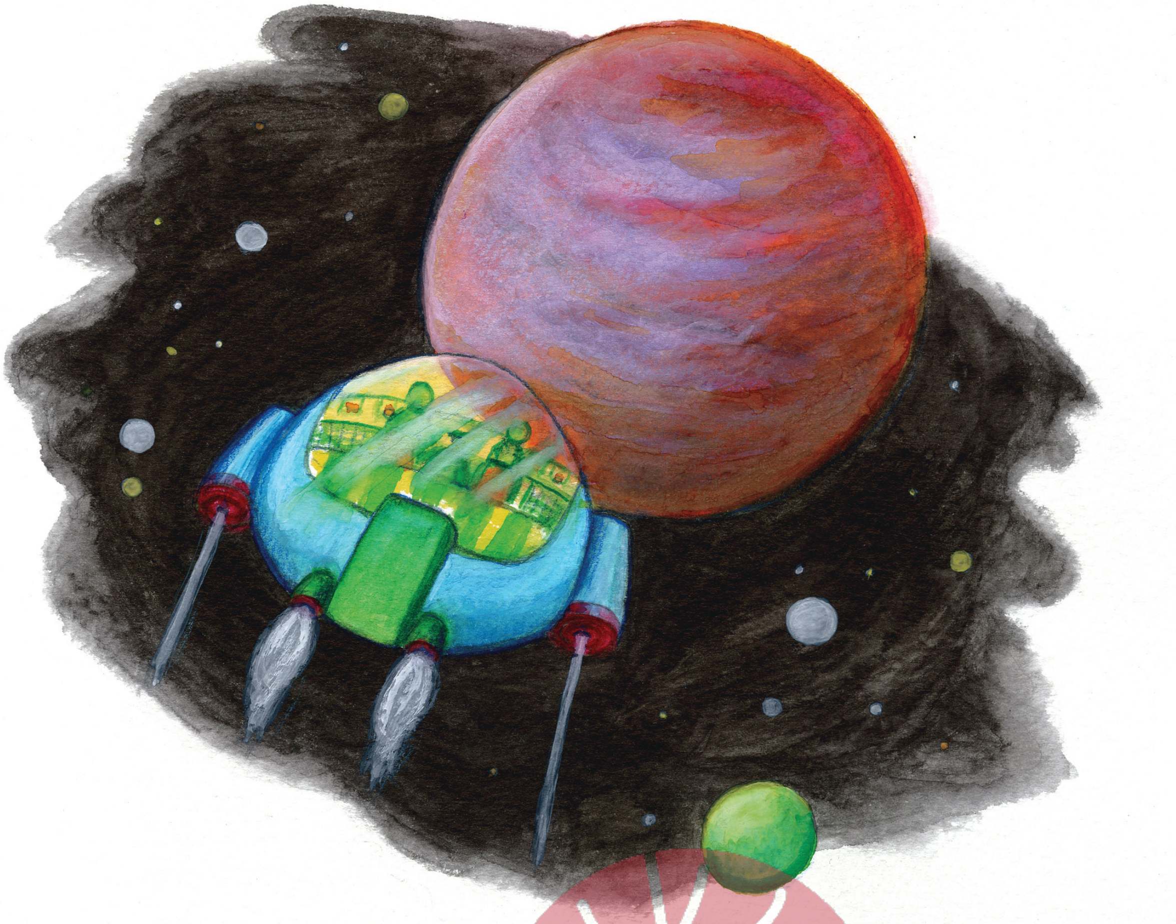
आकाश और मार्था वह गरम पेय पी चुके तो फंकी ने बात आगे बढ़ाई, "उस खोज के बारे में हमें बताओ!"

मार्था ने बताना शुरू किया।

"करीब बीस साल पहले की बात है। पृथ्वी ग्रह के अनुसार सन् दो हज़ार बयालीस की। अमेरिका और भारत के संयुक्त प्रयास से सौरमंडल से बाहर जा सकने की क्षमता वाला अंतरिक्ष यान तैयार किया गया। उन्नीस साल पहले जब वह यान सौरमंडल की परिधि से बाहर निकलकर अंतरिक्ष के अनजाने क्षेत्र में घुसा तो एक दिन वह एक अंधेरे ग्रह से टकराया। उसने वहाँ की बहुत सारी तस्वीरें भेजीं। उन तस्वीरों को देखकर हमारा वैज्ञानिक दल हैरान रह गया था। बहुत सारे तथ्य हमारे अनुकूल थे।

जब वह अंतरिक्ष यान धरती पर लौटा तो अपने साथ वहाँ की धूल-मिट्टी भी लेकर आया था। उसके द्वारा जुटाए गए तथ्य हैरान करने वाले थे। वहाँ का वातावरण पृथ्वी से काफ़ी मिलता-जुलता था। बस परेशानी थी कि वह ग्रह हमेशा अंधेरे में डूबा रहने वाला था। उसपर रेडियोधर्मिता अधिक थी और गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी से डेढ़ गुना अधिक। इसकी वजह से उस ग्रह पर चलना-फिरना कठिन था। मगर यह सब हमारे वैज्ञानिक दल के लिए बड़ी चुनौती नहीं थी।

काफ़ी अध्ययन के बाद उस ग्रह यानी यूसिन पर बस्ती बसाने का फैसला किया गया। इसके लिए खास तरह के स्पेस सूट और जूते तैयार किए गए, जिन्हें पहनने के बाद रेडियोधर्मिता के खतरे और गुरुत्वाकर्षण की परेशानी से छुटकारा पाया जा सके।



फिर मिश्र धातु की एक बड़ी-सी प्लेट तैयार करके एक उपग्रह के ज़रिये यूसिन की कक्षा में इस तरह स्थापित किया गया कि वह दूसरे ग्रह के सूर्य की रोशनी को परावर्तित करके यूसिन पर भेज सके। इसके लिए उस उपग्रह की गति को इस तरह सेट किया गया कि यूसिन पर दिन और रात का अनुपात धरती के दिन और रात के समान रह सके। इस तरह अंधे ग्रह पर रोशनी का इंतज़ाम किया गया।

अंधे ग्रह, यानी यूसिन पर सूरज की रोशनी आनी शुरू हुई तो वहाँ ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ने लगी। वनस्पतियाँ उगनी शुरू हो गईं। फिर धरती की तरह का वातावरण बनने की गुंजाइश दिखने लगी। अभी उस दिशा में पूरी कामयाबी नहीं मिल पाई है। खोज ज़ारी है।''

"तुमने उस अंधे ग्रह पर रोशनी तो कर ली, मगर उससे हमारे इस ग्रह के दिन-रात का अनुपात गड़बड़ा गया। दिन पहले की अपेक्षा दो घंटे अधिक बड़े होने लगे। यहाँ का तापमान कुछ बढ़ गया। इससे कई वनस्पतियों और जीवों का अस्तित्व संकट में पड़ गया है।'' तीसरे आदमी ने फिर कुछ गुस्से में कहा।



फंकी ने उसे गुस्से से बात करने से रोका। फिर मार्था की तरफ़ मुखातिब होकर कहा, "तुम अपनी बात ज़ारी रखो!" मगर मार्था सहम गई थी। उसने बात आगे नहीं बढ़ाई। सूँसी ने पूछा, "तुम्हें वहाँ बसने में किस तरह की परेशानियाँ आईं?"

मार्था को सहमा हुआ देखकर आकाश ने बात आगे बढ़ाई, "उस ग्रह पर कुछ था ही नहीं, न वनस्पतियाँ, न साफ़-सुथरी हवा, न सड़कें, न बिजली, हर चीज़ का इंतज़ाम करना था। जीवन लायक स्थितियाँ तैयार करनी थीं। इसलिए हर स्तर पर परेशानियाँ थीं। सहज कुछ भी नहीं था। हर चीज़ के लिए धरती से सहयोग की ज़रूरत थी।...शुरू में छह-आठ वैज्ञानिकों का दल कुछ समय के लिए वहाँ आता और अपने साथ भवन निर्माण की सामग्री और दूसरे उपकरण लाता। स्पेस क्राफ्ट ही उन वैज्ञानिकों के रहने-सोने का ठिकाना होता था। वे कुछ दिन रहकर कुछ काम करते, फिर वापस लौट जाते। फिर दूसरा दल आता, कुछ काम करता और लौट जाता। इस तरह करीब साल भर तक थोड़ा-थोड़ा काम चलता रहा।

फिर वहाँ बसने का फैसला किया गया। तय हुआ कि सबसे पहले ऐसे वैज्ञानिक जोड़ों को वहाँ बसाया जाए, जिन्हें अंतरिक्ष विज्ञान के अलावा दूसरे कामों में भी विशेषज्ञता हासिल हो। इसके लिए कुछ नियम-कायदे बनाए गए। पहली शर्त यह थी कि वैज्ञानिक जोड़े यूसिन पर ही रहकर अपने बच्चे पैदा करेंगे। इसके पीछे मकसद यह था कि वहाँ पैदा होने वाले बच्चे आसानी से वहाँ के वातावरण में ढल जाएँगे। इस तरह वहाँ नई पीढ़ी तैयार करने का इरादा था। इस मकसद से जो पहला वैज्ञानिक दल यूसिन पर बसने आया, उसमें हमारे माता-पिता भी थे।

उसके बाद थोड़े-थोड़े अंतराल पर और भी लोग आकर वहाँ बसते रहे। अभी लोगों के बसने का सिलसिला खत्म नहीं हुआ है। जैसे-जैसे वहाँ का वातावरण अनुकूल हो रहा है, काम का दायरा बढ़ रहा है, लोग आकर बसते जा रहे हैं। अभी तक करीब डेढ़ हज़ार परिवार वहाँ बस चुके हैं। निर्माण कार्य और शोध आदि में इस्तेमाल होने वाली मशीनें पर्याप्त मात्रा में आ चुकी हैं। हमारी एक समृद्ध प्रयोगशाला तैयार हो चुकी है। परमाणु संयंत्र के ज़रिये पर्याप्त बिजली बनाई जाने लगी है। ट्रीटमेंट प्लांट लगाकर पीने का पानी सप्लाई होने लगा है। अब तो कुछ फ़सलें भी उगाई जाने लगी हैं। सड़कें तैयार हो रही हैं। एक सीमेंट फैक्ट्री लगाई जा रही है। अधिक यूरेनियम वाले इलाकों की पहचान कर ली गई है। रेडियोधर्मिता का प्रभाव काफ़ी हद तक दूर कर लिया गया है। पानी बरसने से हवा पहले से काफ़ी साफ़ हो गई है। कुछ सालों में हम हर मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो जाएँगे। धरती से चीज़ें मँगाने की ज़रूरत नहीं रहेगी।

भविष्य में वहाँ बहुत सारे लोगों के बसने, होटल, रिसॉर्ट वगैरह जैसी व्यावसायिक गतिविधियाँ भी शुरू होंगी। धरती से बड़ी मात्रा में सैलानियों के आने की संभावना है। इसलिए सबसे पहले टूरिज़्म को बढ़ावा देने की योजना है। लेकिन इसके लिए बुनियादी सुविधाएँ जुटाना ज़रूरी है। इस दिशा में तेज़ी से काम चल रहा है।

आपको पता है, जब लोग वहाँ आकर बसे उसके करीब तीन साल बाद यूसिन पर पहली बार बारिश हुई थी! मैं तब काफ़ी छोटा था। उस दिन लोग इतने खुश थे कि पूछिए मत! धरती से लगातार बधाइयों के संदेश आ रहे थे। बारिश के उस दिन को हम हर साल त्यौहार के रूप में मनाते हैं; जैसे लोग क्रिसमस, होली, दीवाली मनाते हैं। अब तो इतना पानी बरसता है कि जो नदी-नाले सूख गए थे, वे साल भर भरे रहते हैं। पानी की कोई कमी नहीं है।

हमारी पढ़ाई-लिखाई का तरीका भी धरती के बच्चों से अलग रखा गया। हमें धरती की सभ्यता के बारे में थोड़ा-बहुत बताया जाता है। सबसे अधिक हमें यूसिन की स्थितियों और उस पर लगी मशीनों-उपकरणों के बारे में जानकारी दी जाती है। अब हमें वहाँ की हर मशीन के बारे में जानकारी है। हम कोई भी उपकरण आसानी से संचालित कर सकते हैं।''

"उस दिन तुम लोग हवाई जहाज चला रहे थे।'' सूँसी ने कहा।

"वह हवाई जहाज नहीं, टॉय प्लेन था। जैसे धरती पर बच्चे साइकिलें चलाते हुए खेलते हैं, वैसे ही हम टॉय प्लेन चलाते हैं। सड़कें और समतल मैदान नहीं है न वहाँ, इसलिए। अभी पूरी तरह खुले में घूमने लायक वातावरण वहाँ पर नहीं बन पाया है। इसलिए एक खास क्षेत्र में हम लोग टॉय प्लेन उड़ा सकते हैं। उससे बाहर नहीं जा सकते। वे प्लेन यूरेनियम ईंधन से चलते हैं और हमारे कण्ट्रोल रूम से नियंत्रित संचालित होते हैं। जैसे ही हम कण्ट्रोल एरिया से बाहर जाते हैं, प्लेन को वापस बुला लिया जाता है। उस दिन हमने अपने प्लेन में तकनीकी गड़बड़ी पैदा करके कण्ट्रोल एरिया से बाहर निकलने में कामयाबी हासिल की थी।'' आकाश ने कहा।

"क्या-क्या खोजें की हैं तुम लोगों ने उस ग्रह के बारे में?'' सूँसी ने पूछा।

"अभी तो इतना ही जान पाए हैं कि यूसिन पर भी कभी जीवन था और बहुत समृद्ध सभ्यता थी। हरे-भरे जंगल, नदियाँ, पहाड़ और तरह-तरह के जानवर थे। किसी भयानक आपदा के चलते उस ग्रह का जीवन नष्ट हो गया, लेकिन हम यह समझ नहीं पाए कि वहाँ के लोग उस अंधेरे ग्रह पर रहते कैसे थे!...लेकिन आपने खुद बताया कि आप लोग उसी ग्रह के वासी हैं, तो आपको बेहतर पता होगा कि उस ग्रह पर कैसा जीवन था और वह समाप्त कैसे हो गया!''

"वह तो हमें पता है, लेकिन तुमसे जानना चाहते हैं कि तुम लोगों ने वहाँ क्या खोजा और क्या योजनाएँ हैं तुम्हारी।'' फंकी ने कहा।

आकाश ने कहा, "अभी तो हम यही मान कर चलते हैं कि भूकंप के भारी झटके या सुनामी जैसे जल प्लावन की वजह से पूरे ग्रह का जीवन समाप्त हो गया होगा। पृथ्वी पर ऐसी अनेक सभ्यताएँ नष्ट हो चुकी हैं। वैसे ही यूसिन की सभ्यता नष्ट हो गई होगी।...मगर पूरे ग्रह का अस्तित्व कैसे मिट गया, यह अभी तक जान नहीं पाए हैं।...जगह-जगह भवन निर्माण के लिए खुदाई में हमें ज़मीन के अंदर दबे



भवन, नरकंकाल और बहुत सारे जानवरों के कंकाल मिले हैं। उन्हें देख-परख कर यही जान पाए हैं कि उस आपदा को हुए बहुत समय नहीं बीता है। हमारे पुरातत्व के विशेषज्ञ उन अवशेषों की जाँच-परख करके अंतिम नतीज़े पर पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं।...''

तभी एक व्यक्ति आकर भोजन का संकेत दे गया। फंकी ने कहा, "बाकी बातें हम भोजन के बाद ज़ारी रखेंगे।''

तभी मार्था ने आकाश को याद दिलाया, "वह जो ताबूत में ज़िंदा आदमी मिला था, उसके बारे में तो तुमने बताया ही नहीं!''

वहाँ उपस्थित सभी के मन में जिज्ञासा उभरी, मगर फंकी ने कहा, "कुछ बातें खाना खाते समय भी हो सकती हैं!''

फिर सभी लोग उठकर भोजन कक्ष में पहुँचे।



ताबूत में ज़िंदा इंसान

भोजन कक्ष में सुबह के नाश्ते के समय जैसी लोगों की उपस्थिति नहीं थी। जो लोग आकाश-मार्था से पूछताछ कर रहे थे, उनके अलावा दो-तीन लोग और थे।

भोजन शुरू हुआ तो सूँसी ने आकाश से कहा, "तुम खोजों के बारे में बता रहे थे। ताबूत में मिले ज़िंदा इंसान के बारे में...!"

आकाश ने भोजन करते हुए बात शुरू की, "यह हमारे पैदा होने से पहले की बात है। हमने उस घटना के बारे में अपने माता-पिता से सुनकर और फुटेज देखकर जाना है।...परमाणु रिएक्टर लगाने के लिए एक जगह ज़मीन की खुदाई हो रही थी।...जब से ज़मीन के अंदर सभ्यता के अवशेष दबे होने के सबूत मिले थे, खुदाई करते वक्त काफ़ी सावधानी बरती जा रही थी। पहले देख लेते थे कि ज़मीन के अंदर कोई ऐसी चीज़ तो नहीं है, जो खुदाई में नष्ट हो जाए और उसके ज़रिये हासिल होने वाली महत्त्वपूर्ण जानकारी से हम वंचित न रह जाएँ।...

ऐसे ही उस दिन खुदाई से पहले लेज़र के ज़रिये ज़मीन के भीतर देखा तो वैज्ञानिक दल हैरान रह गया। वह खुदाई मेरे पापा की निगरानी में हो रही थी। उन्होंने आसपास कैमरे लगा दिए। पुरातत्त्व विशेषज्ञ को भी बुला लिया। सावधानी से खुदाई होने लगी। करीब तीस मीटर गहरी खुदाई के बाद लोहे का एक भारी-भरकम मज़बूत ताबूत अंदर से निकला। वह ताबूत क्या था, कोई मशीन थी! बहुत सारे तार जुड़े थे उससे! जिस जगह वह रखी गई थी, वह शायद कोई प्रयोगशाला रही होगी।

ताबूत उठाकर हमारे कैंप में लाया गया। फिर उस ताबूत का ढक्कन खोला गया तो उसमें लेटा हुआ आदमी उठकर बैठ गया। उसके सिर और दाढ़ी के बाल काफ़ी लंबे और घने थे। उसे देखकर लोगों की हैरानी का कोई ठिकाना नहीं रहा। चूँकि उस पूरी घटना को सेटेलाइट के ज़रिये धरती पर



बैठा वैज्ञानिक दल भी देख रहा था, वे लगातार संदेश भेज रहे थे कि उस आदमी को जैसे भी हो ज़िंदा रखो। उसके ज़रिये बहुत सारी जानकारियाँ मिल सकेंगी। धरती से संदेश आया तो यहाँ मेरे पापा और दूसरे वैज्ञानिकों का तनाव बढ़ गया। उन्हें तमाम तरह की आशंकाओं ने घेर लिया।

तुरंत उस आदमी की देखभाल के लिए डॉक्टर को बुला लिया गया। उसे बचाने के जितने भी उपाय हो सकते थे, सब जुटा लिए गए।

वह आदमी अपने आसपास देखकर हैरान था। पहले तो अपनी भाषा में उसने कुछ लोगों के नाम पुकारे, और कुछ बोलता रहा। फिर अपने आसपास खड़े लोगों को पहचान न पाने के कारण वह चुप हो गया। कुछ सोचता रहा। फिर मेरे पापा को अपने पास बुलाया। उनकी आँखों में झाँका। फिर उसने पूछा, ''मैं कहाँ आ गया हूँ।'' सब लोग उसके इस तरह बोलने पर हैरान थे। जब कोई जवाब नहीं मिला तो वह आदमी चिल्ला उठा, "कहाँ आ गया हूँ मैं, कोई बताता क्यों नहीं?''

फिर मेरे पापा ने उसे बताया, "आप कहीं नहीं आए या गए हैं। आप अपनी जगह पर हैं। हम आपके ग्रह पर अजनबी हैं। फिलहाल आपकी सेहत का ध्यान रखना हमारे लिए ज़रूरी है। पहले आप यहाँ इस बिस्तर पर लेट जाइए, आपका चेक-अप हो जाएगा, फिर हम आपको सारी बातें विस्तार से बताएँगे।''

मगर वह आदमी ताबूत से अलग होने को तैयार ही नहीं था। वह एक बार फिर ज़ोर से चिल्लाया, "नहीं! पहले बताओ तुम लोग कौन हो! हमारे लोग कहाँ गए?''

फिर मेरे पापा ने सोचा कि उसे जल्दी से सच्चाई बता दी जानी चाहिए, ताकि वह हमारे साथ सहयोग को तैयार हो जाए। उसे बचाना सबके लिए बहुत ज़रूरी था। इसलिए पापा ने उसे बताया, "दरअसल, किसी आपदा की वजह से कुछ साल पहले आपके ग्रह का सारा जीवन समाप्त हो गया। आप भाग्यशाली हैं कि ज़िंदा हैं। आप सहयोग करें तो हमें आपकी सेहत का खयाल रखने में आसानी होगी।''

"कैसे नष्ट हो गया यहाँ का जीवन? कौन हो तुम लोग?'' उस आदमी ने गुस्से से भरी तेज आवाज़ में पूछा।

"देखिए, हम लोग दूसरे ग्रह से आए हैं और आपके ग्रह पर फिर से जीवन बहाल करने की कोशिश कर रहे हैं। हमें अभी ठीक से पता नहीं चल पाया है कि आपके ग्रह का जीवन कैसे नष्ट हो गया। हम पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। आपका सहयोग मिलेगा तो हम जल्दी ही किसी नतीज़े पर पहुँच सकेंगे।'' पापा ने कहा।

मगर वह आदमी चुप हो गया। ताबूत से बाहर निकलकर थोड़ी देर वह चारों तरफ़ देखता रहा। फिर अचानक चिल्ला पड़ा, "तुम्हें पता है, यह क्या है?'' उसने पापा से मुखातिब होकर ताबूत की तरफ़ दिखाते हुए पूछा।

पापा को कोई जवाब समझ में नहीं आया। वे चुप रहे।

फिर उस आदमी ने बताया, "यह लाइफ सेविंग मशीन है। मैंने बनाई है। इसमें बीमार आदमी को एक घंटे के लिए लिटा दो, वह बिलकुल स्वस्थ हो जाएगा। यह मशीन आदमी के शरीर की मृत हो चुकी कोशिकाओं को फिर से ज़िंदा कर देती है। किसी भी रोग के वायरस या बैक्टीरिया को तत्काल मार डालती है। शरीर की किसी भी तकलीफ़ को दूर कर देती है। यह मशीन आदमी को अमर बना देगी। कोई मरेगा ही नहीं।...इसे बनाने में मैंने अपना पूरा जीवन खपा दिया।" उस आदमी के स्वर में पीड़ा थी। अब वह रोने लगा था। उसकी आँखों से आँसू और मुँह से लार टपकने लगा था।

बताते-बताते आकाश ने महसूस किया कि सामने बैठे लोगों में फुसफुसाहट होने लगी है। फंकी के मुँह से बार-बार एक ही शब्द निकल रहा है, "मिस्टर फ्योंदे!"

आकाश चुप हो गया। थोड़ी देर को कमरे में सन्नाटा पसर गया। सबके चेहरे पर पीड़ा थी। जैसे वे अतीत की गहराइयों में गोते लगा रहे हों। तभी अचानक तेज़ स्वर में फंकी ने पूछा, "कहाँ हैं, मिस्टर फ्योंदे?"

उसके गुस्से से भरी आवाज़ को सुनकर आकाश सकपका गया। वह थूक से गला तर करते हुए बोला, "यह सब चल ही रहा था कि ताबूत से निकले उस आदमी..."

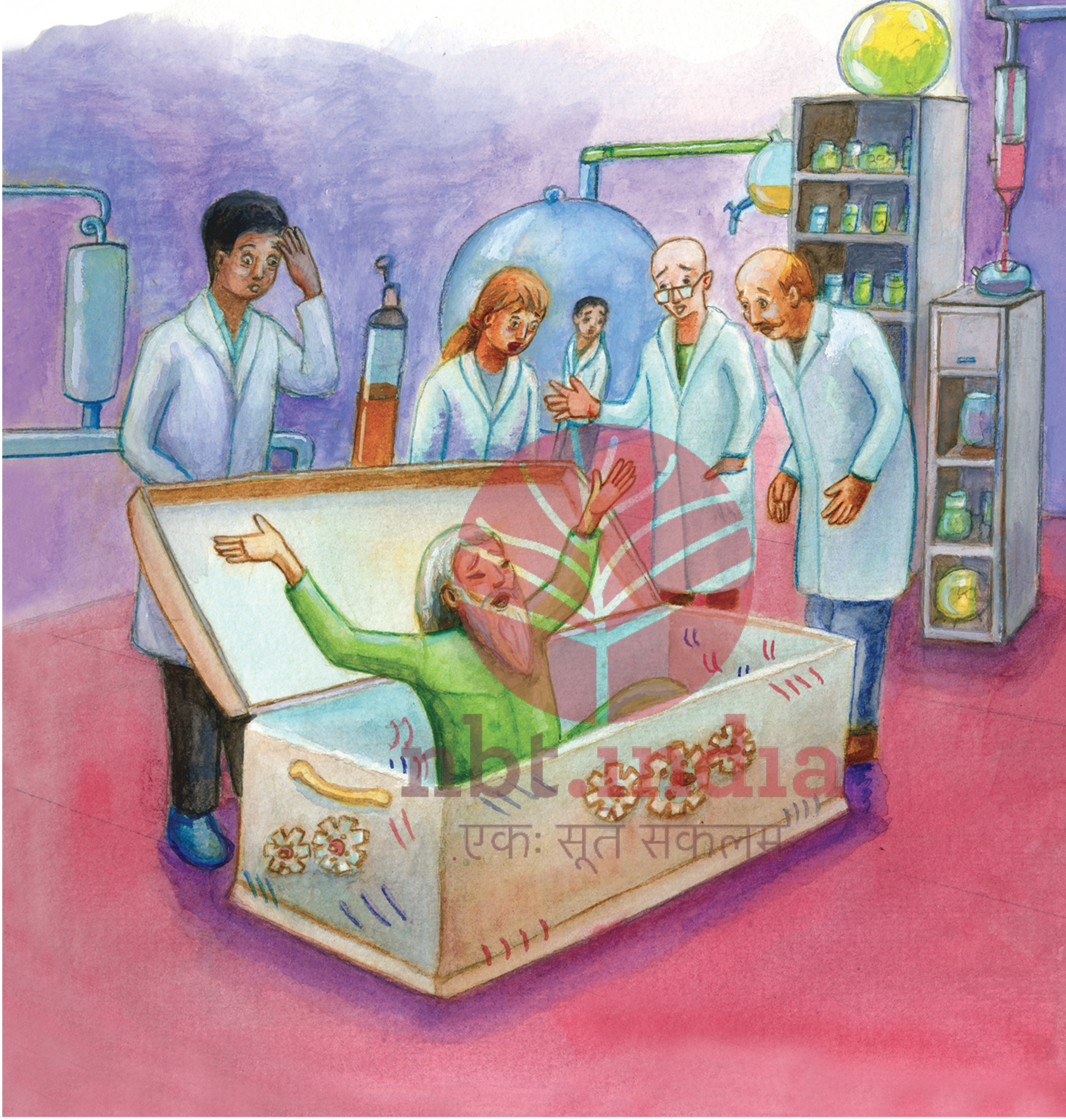
"आदमी नहीं, मिस्टर फ्योंदे कहो! तुम्हें पता है, वे हमारे देवता की तरह हैं! उन्होंने कितने महान आविष्कार किए हैं! यह जो अभी हम लोग लैंग्वेज स्कैनर के ज़रिये आपस में बातचीत कर रहे हैं, उन्हीं का आविष्कार है। उन्होंने दुनिया से भाषा की दीवार मिटा दी। लाइफ सेविंग मशीन पर उनका काम चल रहा था। अगर वह सफल हो जाता तो कोई भी आदमी मरने नहीं पाता।...कहाँ हैं वे?" फंकी ने एक तरह से चिल्लाते हुए आकाश की बात काटी थी।

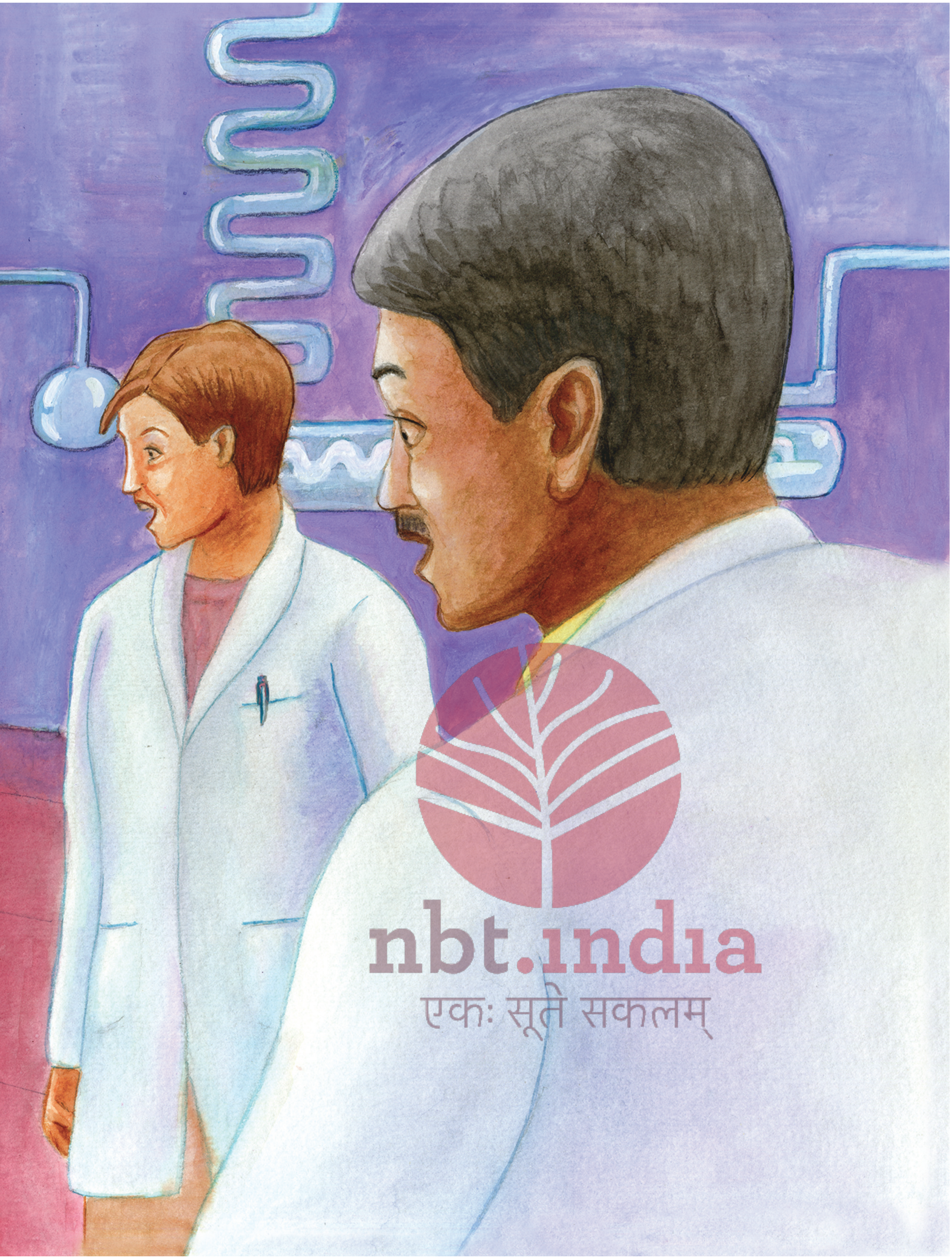
"मिस्टर फ्योंदे शायद अपना मानसिक संतुलन खो चुके थे। उन्होंने चिल्लाकर कहा था, "थोड़ी देर को मुझे अकेला छोड़ दो! दूर हट जाओ सारे लोग!" उनकी यह हालत देखकर पापा ने सबको कुछ दूर हटने को कहा था। फिर मिस्टर फ्योंदे उस मशीन में कुछ करते रहे थे। कुछ तारों को जोड़ा, कुछ को हटाया। फिर उन्होंने ताबूत के अंदर खुद को बंद कर लिया था। कुछ ही मिनट बीते होंगे कि उस मशीन में ज़ोर का धमाका हुआ और सब कुछ समाप्त हो गया। पापा और दूसरे लोग तेज़ी से मशीन की तरफ़ लपके थे, मगर तब तक मिस्टर फ्योंदे इस दुनिया से जा चुके थे! उन्हें बचाया न जा सका!" आकाश ने बताया।

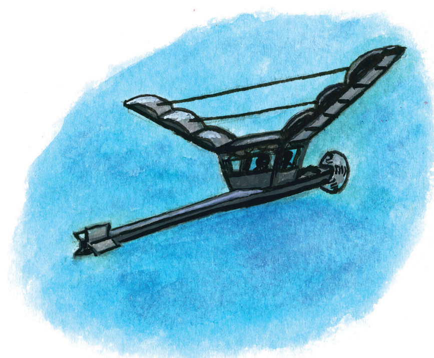
"हे ईश्वर! तू इतना निर्दयी कब से हो गया! मिस्टर फ्योंदे को इस तरह अपने पास बुला लिया!" फंकी विक्षिप्त-सा बोले जा रहा था। वह कुर्सी से उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगा था। टहलते

हुए बड़बड़ाए जा रहा था। फिर सूँसी ने फंकी को संभाला था। वह उसे कमरे से बाहर ले गया। बाकी लोगों के चेहरे पर भी मायूसी थी। लोग एक-एक करके कमरे से बाहर जाने लगे थे। उनमें से एक महिला ने इशारे से मार्था और आकाश को अपने साथ आने को कहा था।

वह उन्हें उनके कमरे में ले गई। उन्हें आराम करने को कहकर वह लौट आई।







पैडल प्लेन

कमरे में पहुँचकर आकाश और मार्था ने कुछ राहत की साँस ली। मगर मन उदास था। वे सोच रहे थे कि इतनी विकसित सभ्यता कैसे नष्ट हो गई। अगर इन लोगों ने इस ग्रह की तलाश न की होती तो शायद इनकी प्रजाति का एक भी मनुष्य उस धरती पर न बचता। मार्था कुछ डरी हुई थी। उसने आकाश से कहा, "जो धरती अपने लोगों को इतनी बेदर्दी से लील गई, हम उसी पर अपनी नई सभ्यता विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं! एक दिन हमारे साथ भी वैसा ही हो गया तो!''

"सभ्यताएँ मिटती और बनती रहती हैं। यह कोई अनोखी बात नहीं है। इस तरह डरकर विकास के रास्ते तलाशने नहीं छोड़ते। इन्हें ही देखो! मुट्ठी भर बचे होंगे, लेकिन जीवन को नए ढंग से बेहतर बनाने की कोशिश में जुटे हैं। अपनी नष्ट हो गई धरती से इनका लगाव अब भी बना हुआ है। हमारा वहाँ बसना इन्हें बरदाश्त नहीं हो रहा है।...हमें तो यह जानने की कोशिश करना है कि ये चाहते क्या हैं।'' आकाश ने समझाया।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई और वही महिला कमरे में दाखिल हुई जो कुछ देर पहले उन्हें वहाँ छोड़ गई थी। "चलो, तुम्हें बाहर घुमा लाती हूँ!'' उसने कहा।

आकाश और मार्था थोड़े हैरान हुए। उन्होंने एक-दूसरे की तरफ़ देखा। फिर सहज ही चलने को तैयार हो गए।

बाहर निकलकर आकाश और मार्था आसपास के पहाड़ों और आसमान को चकित भाव से देख रहे थे। लेम्डा आकार का सूरज उन्हें ज़्यादा आकर्षित कर रहा था। पेड़ों पर तरह-तरह के फल थे। चहकते रंग-बिरंगे पंछी थे। मगर सूरज की रोशनी में सतरंगी पहाड़ उन्हें अधिक भा रहे थे। वे सब कुछ को हैरानी से देख रहे थे।



कुछ दूर चलने के बाद बगीचे में बनी पत्थर की एक बेंच की तरफ़ इशारा करते हुए उस महिला ने आकाश और मार्था से बैठने की इच्छा ज़ाहिर की। तीनों वहाँ जाकर बैठ गए।

"मैं म्याँमा। मैंने तुम्हें अपना नाम नहीं बताया था।'' उस महिला ने कहा। "आज हमारे यहाँ काफ़ी गमगीन हैं लोग! मिस्टर फ्योंदे, मिस्टर फंकी के मामा थे। मैं तो कभी मिली नहीं उनसे। जब भी देखा या बात की है, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिये ही। उन्हें हमारे यहाँ देवता की तरह मानते हैं लोग! यों तो हम मान चुके थे कि हमारे ग्रह के सारे लोग खत्म हो गए हैं, लेकिन तुम लोगों की बात सुनने के बाद जैसे लग रहा है, अभी-अभी सब कुछ खत्म हुआ है! पुराने घाव हरे हो गए हैं!...कल तक सब सामान्य हो जाएगा! लेकिन मैंने सोचा, तुम लोग यहाँ बोर होगे, तुम्हारा ध्यान रखना चाहिए, इसलिए बाहर ले आई।''

"कितने साल हुए होंगे आप लोगों को इस ग्रह पर आए?'' आकाश ने पूछा।

"यही कोई साठ साल।'' म्याँमा ने जवाब दिया।

"और आपके उस ग्रह को नष्ट हुए कितने दिन हुए?'' मार्था ने पूछा।

"पचास साल से कुछ कम।'' म्याँमा ने कहा।

"हैरानी की बात है कि मिस्टर फ्योंदे इतने साल तक उस मशीन में पड़े रहे और ज़िंदा रहे!'' आकाश ने कहा।

"उस मशीन की खासियत ही यही थी। वह किसी को मरने नहीं देती। वह जियो इलेक्ट्रिक, यानी भू-विद्युत से संचालित होती थी। किसी परिस्थिति में अगर भू-विद्युत का प्रवाह बाधित हो या रुक जाए तो वह एटोमिक सेल से चलने लगती थी। इसलिए भयानक हादसे के बावजूद उसका विद्युत प्रवाह बंद नहीं हुआ था।...मैं कल तुम्हें उस मशीन और अपने ग्रह के बारे में वीडियो फुटेज दिखाऊँगी तो समझ जाओगे। अभी तो इस ग्रह को देखो-समझो!'' म्याँमा ने कहा।

तभी उनके ऊपर से एक बड़े आकार के पंछी जैसी काली-सी चीज़ सरसराते हुए गुज़री। आकाश और मार्था उसे हैरानी से देखने लगे। म्याँमा उनकी जिज्ञासा समझ गई। उसने उन्हें बताया, "यह पैडल प्लेन है। जैसे पैडल से साइकिल चलाई जाती है, वैसे ही यह प्लेन चलता है। इसमें किसी प्रकार के ईंधन की ज़रूरत नहीं होती। इसमें एक साथ दो लोग सफ़र कर सकते हैं।''

"क्या आपके यहाँ मोटरगाड़ियाँ नहीं चलतीं?'' मार्था ने पूछा।

"नहीं! हमने गाड़ियाँ और सड़कें नहीं बनाईं। हालाँकि विकास के लिए ये दोनों चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं, लेकिन इसके लिए जो संसाधन चाहिए, वे हम नहीं जुटा पाए हैं। अभी यहाँ बस ही रहे थे कि वहाँ हमारा ग्रह नष्ट हो गया। सारे संसाधन खत्म हो गए। अब यहाँ कल-कारखाने लगाना, सड़कें बनाना एकदम से संभव नहीं है।...फिर मिस्टर फंकी का सिद्धांत है कि कुदरती चीज़ों को छेड़े बगैर विकास के साधन जुटाए जाने चाहिए। हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ का नतीज़ा देख चुके हैं। हमारा मूल ग्रह प्रकृति के साथ अंधाधुंध छेड़छाड़ की वजह से ही नष्ट हुआ। अब हम इस ग्रह को खोना नहीं चाहते। इसलिए पैडल प्लेन जैसे यंत्रों से काम चलाते हैं। यह अलग बात है कि यह सारी तकनीक हमारे पहले ग्रह की तुलना में काफ़ी पुरानी पड़ चुकी है।'' म्याँमा ने कहा।

"प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीज़ा बुरा तो होता है, मगर यह कहना ठीक नहीं होगा कि इसी की वजह से सारी परेशानियाँ पैदा होती हैं। जब प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं होती थी, तकनीकी संसाधन ज़्यादा नहीं थे, तब भी प्राकृतिक आपदा आती थी। हमारी धरती पर इसके कई उदाहरण मौजूद हैं, जब प्रलय की वजह से कई उन्नत सभ्यताएँ नष्ट हो गईं। दूसरे ग्रहों की हलचलों का भी तो खमियाजा हमें भुगतना पड़ सकता है। इसलिए विकास को रोकना कहाँ तक ठीक होगा?'' आकाश ने तर्क दिया।



"तुम्हारी बात कुछ हद तक ठीक हो सकती है, मगर यह आजमाया जा चुका है कि जितना ध्यान हम कुदरत का रखेंगे, उससे ज़्यादा वह हमारा ध्यान रखेगी। तुम जितना ही कुदरत के करीब रहोगे, तुम्हारी ज़रूरतें कम होती जाएँगी। विकास के नाम पर हम क्या करते हैं? अंधाधुंध संसाधन ही तो जुटाते हैं! मगर आखिर ज़रूरतें बढ़ती जाती हैं, जो कभी पूरी नहीं हो पातीं।...अभी शायद तुम इन बातों को गहराई से न समझ पाओ।...हम भी विकास के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन उसके लिए जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है, उसके लिए अभी प्रयास कर रहे हैं।...खैर, छोड़ो इन बातों को! क्या तुम पैडल प्लेन उड़ाना चाहोगे?'' म्याँमा ने कहा।

"जी बिलकुल! यह तो हमारे लिए बिलकुल अलग अनुभव होगा!'' मार्था ने चहकते हुए कहा।

"चलो, उधर मैदान में चलते हैं। तुम्हारा परिचय बांड्रा और बोंग से कराती हूँ। दोनों जुड़वाँ भाई हैं। बेचारे जन्म से गूँगे-बहरे हैं। मगर पैडल प्लेन बहुत अच्छा चलाते हैं। वे दूर तक दूसरे पहाड़ों पर भी जाते हैं। यहाँ से कुछ दूर घाटी में इस ग्रह के मूल निवासियों की बस्ती है। ये दोनों वहाँ भी जाते हैं। वे लोग बांड्रा और बोंग को कोई देवता मानते हैं। शुरू में जब हम यहाँ बस रहे थे, यहाँ के मूल निवासियों ने हम पर कई बार हमले किए, मगर हमारी ऑटोमेटिक लेज़र गन के आगे उनकी एक न चली। जो भी उसके सामने आता, वह बौना हो जाता। काफ़ी समय तक संघर्ष चलता रहा। इस तरह यहाँ के बहुत सारे मूल निवासी हमारी लेज़र गन के आगे आकर बौने बन गए थे। इसीलिए बाद में शायद उन्होंने हार मान ली होगी। फिर भी काफ़ी समय तक हमारी हिम्मत नहीं हुई उनके बीच जाने की। इस तरह लंबे समय तक हमारा उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया। अब बांड्रा और बोंग की वजह से उनसे संपर्क लगातार बढ़ता गया है।''

"कैसे?'' मार्था ने जिज्ञासा प्रकट की।

अब म्याँमा उठकर मैदान की तरफ़ बढ़ने लगी थी। मार्था और आकाश भी उसके पीछे हो लिए। फिर म्याँमा ने बताना शुरू किया, "एक दिन पैडल प्लेन चलाते हुए दोनों घाटी में उतरे थे। उन्हें देखते ही यहाँ के मूल निवासियों ने उन्हें घेर लिया था। वे हमला करने ही वाले थे कि बांड्रा और बोंग ने अपने लेज़र वाच से उनको बौना बना दिया। वे डर गए। शायद उन्होंने माना कि ये दोनों कोई दैवी शक्ति हैं। यहाँ के मूल निवासियों को जादू-टोने, दैवी शक्तियों में कुछ ज़्यादा यकीन है। इसलिए वे सभी ज़मीन पर लेटकर बांड्रा और बोंग का अभिवादन करने लगे। उन्होंने अपने हथियार फेंक दिए। बांड्रा और बोंग समझ गए कि उन्होंने सरेंडर कर दिया है। ये दोनों गूँगे-बहरे ज़रूर हैं, मगर आदमी की देह-भाषा की उन्हें बहुत अच्छी समझ है।'' म्याँमा बताते-बताते रुक गई थी। मैदान में पहुँचकर आसमान की तरफ़ सिर उठाए वह चारों तरफ़ देख रही थी। शायद वह बांड्रा और बोंग को तलाश रही थी।

आकाश ने टोका, "फिर क्या हुआ?''

"अँऽऽऽ... हाँ! फिर बांड्रा और बोंग ने बौने हो गए लोगों को उनके असली आकार में बना दिया। फिर तो क्या था, ताँता लग गया उनके आगे बौने लोगों का। चारों तरफ़ शोर-शराबा हो गया! दूर-दूर से लोग दौड़े चले आए! हमारी लेज़र गन के आगे आकर जो लोग बहुत पहले बौने हो गए थे उन्हें भी बांड्रा और बोंग ने उनके असली आकार में कर दिया। फिर क्या था, खुशी के मारे वहाँ के लोगों ने उन्हें अपने कंधों पर उठा लिया! वे उन दोनों को अपने मंदिर में ले गए! वहाँ चबूतरे पर खड़ा करके उनका सम्मान किया। जयजयकार की। तब से वे लोग बांड्रा और बोंग को कोई देवता मानते हैं। उस दिन के बाद से उनका यहाँ के मूल निवासियों की बस्तियों में आना-जाना शुरू हो गया। फिर तो हमें भी इससे काफ़ी मदद मिली। अब उनके साथ हमारा मेलजोल बढ़ गया है। हम उनके बीच नियमित कक्षाएँ लगाते हैं। इस तरह उन्होंने आधुनिक तरीके से खेती करना, नई-नई फ़सलें बोना, कपड़े बुनना-सिलना, पत्थर के घर बनाना, धरती से लोहा-ताँबा-एल्यूमीनियम जैसी धातुएँ निकालना और उनसे तरह-तरह की चीज़ें बनाना सीख लिया है।"

तभी ऊपर से बांड्रा और बोंग का प्लेन गुज़रा। बातचीत रुक गई। म्याँमा ने हाथ हिलाकर उन्हें उतरने का इशारा किया। एक छोटा-सा चक्कर लगाकर बांड्रा और बोंग नीचे उतर आए।

म्याँमा ने आकाश और मार्था का बांड्रा और बोंग से परिचय कराया। इशारे में बातचीत होती रही। मगर, चूँकि इशारे में बात करते हुए भी म्याँमा कुछ-कुछ बोल रही थी, इसलिए मार्था और आकाश को उनके बीच का संवाद समझने में मुश्किल नहीं हुई। बांड्रा ने इशारे से कहा कि रुको मैं दूसरा प्लेन भी लाता हूँ, फिर चलते हैं। और चला गया।

म्याँमा फिर उसी बेंच की तरफ़ लौटने लगी, जहाँ वे पहले बैठे हुए थे। "इनसे दोस्ती कर लोगे तो तुम बोर नहीं होगे। ये तुम्हें इस ग्रह की कई खूबसूरत जगहें दिखा सकते हैं।" चलते-चलते म्याँमा ने कहा।

"इनका साथ बड़ा दिलचस्प होगा!" आकाश ने कहा।

तभी दो पैडल प्लेन उनके करीब आकर उतरे। "लो, वे दोनों आ भी गए!" म्याँमा ने हँसते हुए कहा। बांड्रा और बोंग इशारे से आकाश और मार्था को अपने प्लेन में बुला रहे थे।

आकाश बोंग के प्लेन में चढ़ गया और मार्था बांड्रा के। अब वे आसमान में उड़ रहे थे। यह सचमुच दिलचस्प अनुभव था। अभी तक उन्होंने इंजन से चलने वाला प्लेन उड़ाया था। ऐसे प्लेन में वे पहली बार उड़ रहे थे, जो पैडल की गति से संचालित होता हो। बांड्रा और बोंग इशारे से आकाश और मार्था को प्लेन चलाने की तरकीब समझाते रहे। आकाश और मार्था के लिए यह मुश्किल नहीं था, बस तकनीक का फ़र्क था। इसलिए वे जल्दी ही प्लेन चलाना सीख गए। दो-तीन चक्कर काटने के बाद उन्होंने खुद भी पैडल प्लेन को चलाकर दो चक्कर लगाए।



अंधेरा घिरने लगा तो वे नीचे उतर आए। म्याँमा पत्थर की बेंच पर बैठी सब देख रही थी। जब वे उसके पास आए तो उसने पीठ ठोंककर सबको शाबाशी दी। फिर वे अपने-अपने कमरे में चले गए।



जादू-टोने की घाटी में

सुबह मार्था और आकाश की नींद खुली तो बीते कल की यादें फिर से ताज़ा हो उठीं। "ब्रांडा और बोंग हैं बड़े दिलचस्प!'' मार्था ने कहा।

"हूँ, मगर कितना विचित्र है कि जिन लोगों ने दुनिया की आँखों में आँखें डालकर भाषा की दीवार गिराने की तरकीब निकाल ली, उन्हें अपने गूँगे-बहरे बच्चों से इशारों में बात करनी पड़ती है!'' आकाश ने कहा।

"कुदरत की भाषा भला कौन ठीक से समझ पाया है! मगर यह भी तो देखो कि वे गूँगे-बहरे भले ही हैं, लेकिन जो काम भाषा बोलने वाले नहीं कर पाए, वे करके दिखा रहे हैं! कुदरत हर किसी को कोई न कोई हुनर देती ज़रूर है। बांड्रा और बोंग बिना बोले यहाँ के मूल निवासियों को प्रवासी लोगों से जोड़ रहे हैं, यह क्या कम बड़ी बात है!'' मार्था ने आकाश को समझाया।

"लगता है, मन लग गया है तुम्हारा इस ग्रह पर!'' आकाश ने बात बदली।

"मन लगाने के सिवा चारा भी क्या है।'' मार्था ने उसी भाव से जवाब दिया।

"चलो, शादी करके यहीं बस जाते हैं!'' आकाश।

"क्यों और लड़के यहाँ नहीं हैं क्या?'' मार्था।

"इसका मतलब मैं बेवजह उम्मीद पाले हुआ था, अब तक!'' आकाश।

"गलती इंसान से ही होती है! जब समझ आए, उसे सुधार लेने में ही समझदारी है!'' मार्था।

तभी दरवाज़े की घंटी बजी। आकाश ने दरवाज़ा खोला। म्याँमा थी। "तैयार हो जाओ! आज तुम लोग फ्री हो। नाश्ता करके चाहो तो बांड्रा और बोंग के साथ घाटी का उत्सव देखने जा सकते हो।'' म्याँमा ने कहा।



"कैसा उत्सव?" आकाश ने पूछा।

"यहाँ के मूल निवासी इन दिनों उत्सव मनाते हैं। जब पेड़ों के पत्ते पीले पड़ कर झड़ने लगते हैं और घाटी के मंदिर की पताका पर सूरज की पहली किरण पड़ने लगती है, मंदिर का पुजारी उत्सव का दिन तय कर देता है। दरअसल, कई महीनों तक सूरज पहाड़ी के पीछे निकलता है। इसलिए उसकी पहली किरण मंदिर पर नहीं पड़ती, मगर इस मौसम में सूरज पहाड़ी के ऊपर से निकलना शुरू कर देता है, इसलिए उसकी किरणें मंदिर पर पहले पड़ती हैं। दरअसल, अब दिन छोटे होने लगे हैं।" म्याँमा ने समझाया।

"मगर उत्सव कैसा होता है?" आकाश ने पूछा।

"वह तो तुम वहीं जाकर देखना। अभी बस तैयार हो जाओ! मैं बांड्रा और बोंग को कह देती हूँ कि वे तुम्हें भी साथ लेते जाएँगे।" कहकर म्याँमा चली गई।

"बड़ा मज़ा आएगा! चलो फटाफट तैयार हो जाओ!" मार्था ने खुश होते हुए कहा। फिर नहाने के लिए बाथरूम में चली गई।

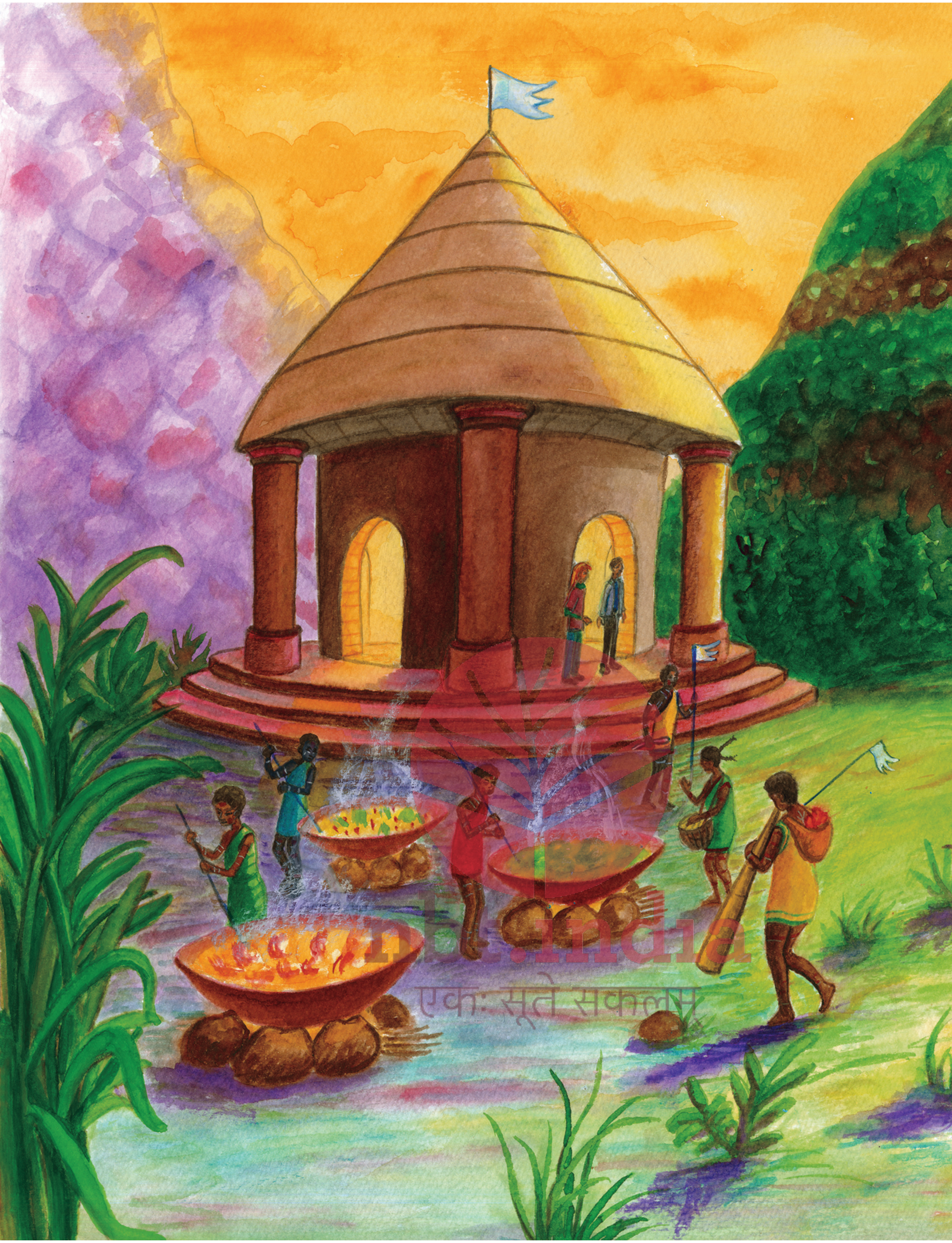
आकाश सोचने लगा, मार्था तो सचमुच यहाँ मौज़ मनाने के मूड में लगती है। मुझे ही यहाँ से निकलने की कोई तरकीब सोचनी पड़ेगी। मगर देखना होगा कि इनका सिक्योरिटी सिस्टम क्या है। यहाँ से भागने का तरीका क्या हो सकता है। जितना ही हमें बाहर निकलने की छूट मिलेगी, उतना ही इनके इंतज़ाम के बारे में जानने का मौका मिलेगा। चलो, चलकर देखते हैं! शायद यहाँ के मूल निवासियों के पास इस समस्या का कोई हल नज़र आए।

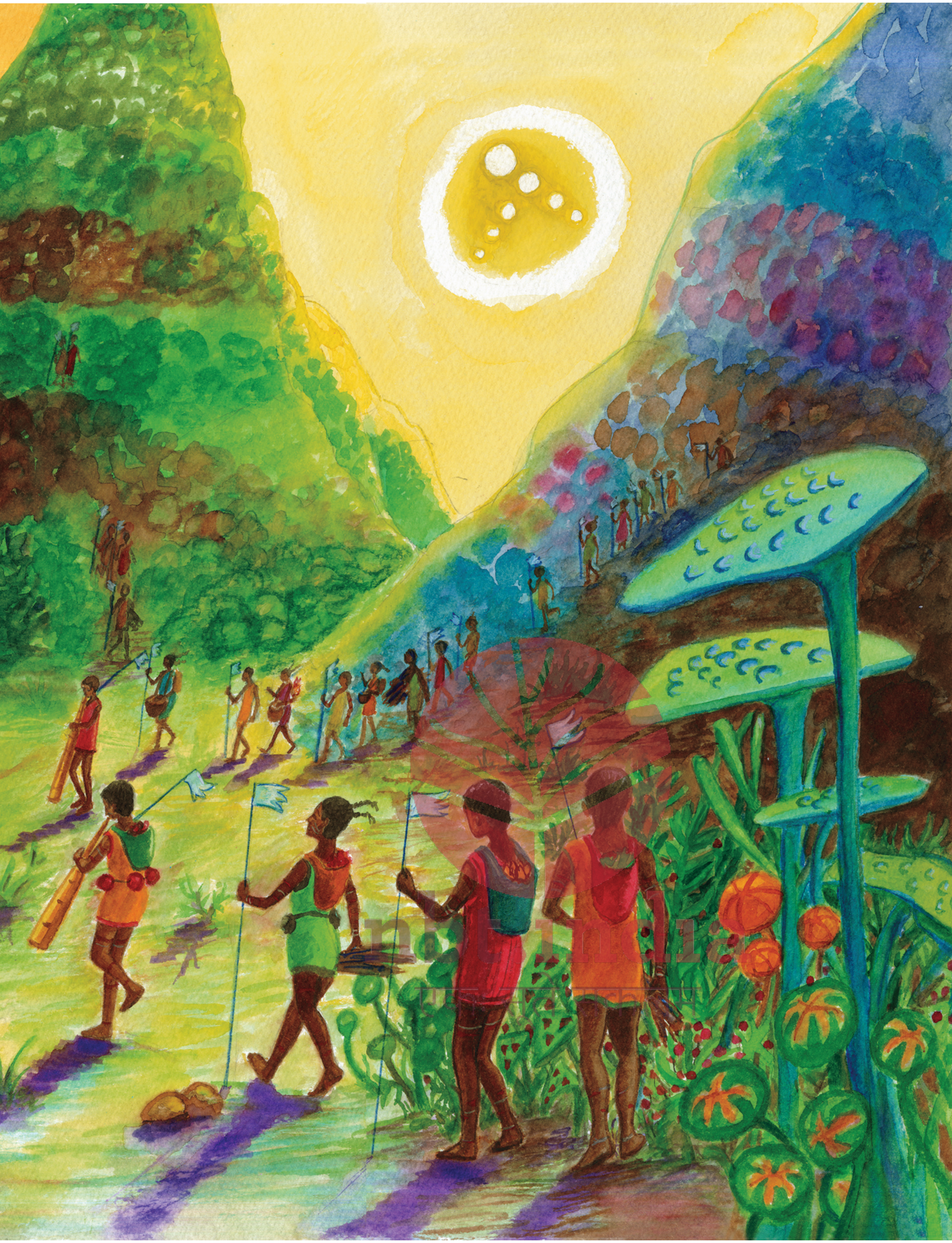
मार्था बाथरूम से निकल आई थी। उसने धक्का देकर आकाश को नहाने के लिए बाथरूम में भेज दिया था। साथ में हिदायत दी थी कि जितना जल्दी हो सके, तैयार होकर निकल आओ।

आकाश नहाकर निकला ही था कि फिर म्याँमा हाज़िर हो गई। वह उन्हें नाश्ते के लिए ले गई। फिर वहीं से बांड्रा और बोंग के साथ उन्हें रवाना कर दिया।

आकाश और मार्था ने पैडल प्लेन से घाटी के ऊपर उड़ान भरते हुए देखा कि सचमुच दृश्य मन मोहने वाले थे। वे जैसे-जैसे घाटी में नीचे उतरते गए, उन्हें विभिन्न दिशाओं से झंडे-पताकाएँ लिए लोगों के समूह नीचे की तरफ़ बढ़ते दीखने लगे। वे सब नाचते हुए चल रहे थे। उनके ढोल-नगाड़ों की आवाज़ें धीरे-धीरे स्पष्ट होती जा रही थीं। आकाश और मार्था को अंदाज़ा लगाने में मुश्किल नहीं हुई कि वे सारे लोग घाटी के उत्सव में हिस्सा लेने जा रहे थे। मार्था सोच रही थी कि काश! उसके पास कैमरा होता तो वह इन दृश्यों की तस्वीरें उतार लेती।

थोड़ी ही देर में उनके प्लेन लकड़ी से बने एक विशाल मंदिर के पास उतरे। तभी काले, अधनंगे, अपने शरीर और चेहरों पर रंग-बिरंगी धारियाँ बनाए कुछ लोग पताका लगी लाठियाँ लिए उनके प्लेन





के करीब आ गए। यह देखकर आकाश और मार्था डर गए। मगर बांड्रा और बोंग ने उन्हें इशारे से कहा कि घबराने की ज़रूरत नहीं है। जैसे ही बांड्रा और बोंग प्लेन से उतरे, लाठियाँ पटकते हुए वे लोग एक-दूसरे के हाथ में हाथ डाले घेरा बनाकर नाचने लगे। आकाश और मार्था समझ गए कि यह यहाँ के मूल निवासियों का स्वागत करने का तरीका है। फिर बांड्रा और बोंग ने इशारा किया तो वे दोनों भी प्लेन से नीचे उतर आए। वहाँ के मूल निवासी उन्हें मंदिर के पास बने लकड़ी के एक विशाल चबूतरे पर ले गए। वहाँ पहले से ही मंदिर के पुजारी और दूसरे कई लोग बैठे थे। उन्होंने भी उन सबका स्वागत किया।

उत्सव सचमुच दिलचस्प था। चारों तरफ़ नाचते-गाते लोग पहाड़ों से घाटी में उतर रहे थे। काँवरों में भर-भरकर कुछ सामान और लकड़ियों के गट्ठर ला रहे थे। सबके हाथ में पताकाएँ लगी हुई लाठियाँ थीं। मंदिर के सामने मिट्टी के बड़े-बड़े कड़ाह चढ़े हुए थे। लोग आते और अपने साथ लाए गए अनाज और फल अलग-अलग कड़ाहों में डाल देते। जब कोई कड़ाह भर जाता तो उसके नीचे आग जला दी जाती। हर कड़ाह पर रसोइए और उनके सहयोगी तैनात थे।

फिर लोग मंदिर की परिक्रमा करके पुजारी के सामने सिर झुकाते। पुजारी अपनी लाठी उनकी पीठ या माथे से छुआकर आशीर्वाद देता। फिर लोग विशाल मैदान में चल रहे तरह-तरह के करतब में शामिल हो जाते।

आकाश और मार्था उनकी भाषा समझ नहीं पा रहे थे, मगर उनके हाव-भाव से अंदाज़ा लगा रहे थे कि वे क्या कह रहे हैं। कुछ देर बैठे रहने के बाद आकाश और मार्था ने बांड्रा और बोंग से इशारे से मैदान में चल रहे करतब देखने की इच्छा ज़ाहिर की। उन दोनों ने मंदिर के पुजारी से इजाज़त ली और लकड़ी के चबूतरे से नीचे उतर आए।

चबूतरे से उतरकर आकाश और मार्था ने पलटकर मंदिर की बनावट को ध्यान से देखा। उन्हें हैरानी हुई कि पूरा मंदिर लकड़ियों से बना था। कहीं भी लोहा, सीमेंट या पत्थर का इस्तेमाल नहीं हुआ था। यहाँ तक कि कीलें भी लकड़ियों की ही बनी हुई थीं। मंदिर में किसी देवता की मूर्त्ति नहीं थी। गर्भगृह में बस एक धूनी जल रही थी। निरंतर एक मद्धिम आग की लपट उठ रही थी।

मंदिर देखने के बाद वे मैदान में पहुँचे तो देखकर हैरान रह गए कि थोड़ी-थोड़ी दूरी पर लकड़ी की चौकियों पर अनेक देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। देवी-देवता भी लकड़ियों से बने हुए हैं। उनके आगे धूनी जली हुई है। वहाँ बैठे पुजारी लोगों की झाड़-फूँक कर रहे हैं। बांड्रा ने शायद उनकी हैरानी ताड़ ली थी। उसने आकाश और मार्था को इशारे से समझाया कि ये देवी-देवता मूल निवासियों के अपने-अपने कुल-देवता हैं। उत्सव के समय लोग इन्हें अपने साथ यहाँ लाते हैं। इस तरह पूरे पहाड़ के देवी-देवता तीन दिन तक आपस में मिलते-जुलते हैं और लोगों की दुःख-तकलीफ़ दूर करते हैं।



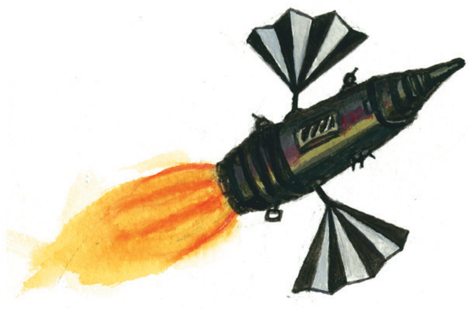
तभी मार्था ने आकाश को कुहनी मारकर एक पुजारी की तरफ़ इशारा किया। एक अधेड़ उम्र का कमर से झुका हुआ आदमी पुजारी के सामने हाज़िर हुआ। पुजारी ने डंडे की हलकी चोट देकर उसके शरीर को जाँचा-परखा, फिर उसे बैठ जाने का इशारा किया। वह आदमी बड़ी मुश्किल से बैठ पाया था। कोई भी देखकर अंदाज़ा लगा सकता था कि उसे काफ़ी तकलीफ़ थी। पुजारी आँखें बंद करके कुछ देर मंत्र पढ़ता रहा। फिर अपना दाहिना हाथ फैलाया तो उसपर कबूतर की तरह का एक पंछी प्रकट हो गया। पुजारी ने पंछी को छोड़ा तो वह रोगी व्यक्ति के पैरों पर जाकर बैठ गया। अब पुजारी उठा, पंछी को उठाया और देवता के चरणों में रख दिया। पंछी गायब हो गया। फिर पुजारी ने रोगी के दोनों तलवों पर बारी-बारी से लाठी का ज़ोरदार प्रहार किया तो रोगी तिलमिला उठा। यह देखकर मार्था की तो चीख ही निकल गई। मगर वहाँ मौजूद किसी व्यक्ति के चेहरे पर कोई करुणा का भाव नहीं था। फिर पुजारी ने मंत्र बुदबुदाते हुए रोगी की दोनों टाँगों को बारी-बारी से ज़ोर का झटका दिया और खड़ा हो जाने का इशारा किया। आकाश और मार्था को देखकर हैरानी हुई कि अब वह आदमी बिलकुल चंगा हो गया था। अब वह खुशी के मारे नाचने लगा था। वहाँ उपस्थित लोगों ने अपनी बाँहें ऊपर उठाए बार-बार झुककर देवता को धन्यवाद दिया।

ऐसे कई जादू-टोने आकाश और मार्था ने उस उत्सव में देखे। कहीं मुँह से आग निकालने का करतब तो कहीं गरम सलाखों से शरीर पर गुदने गुदाते लोग! कहीं किसी जानवर से लड़ता कोई योद्धा तो कहीं किसी पशु या पक्षी पर जादू आजमाता कोई तांत्रिक!...यह सब देखते हुए आकाश और मार्था याद कर रहे थे कि धरती की सभ्यताओं के विकास के बारे में पढ़ाते हुए मार्था की मम्मी भी ऐसी ही बहुत सारी तस्वीरें दिखाती हैं, अलग-अलग देशों की!

मार्था ने कहा, “शायद मनुष्य की सारी सभ्यताएँ लगभग एक ही तरह विकसित होती हैं। ग्रह बदलने से शायद बहुत कुछ नहीं बदलता।” उसकी बातें सुनकर आकाश ने बस मुसकरा दिया था।

यह सब देखने के बाद बांड्रा और बोंग उन्हें वापस मंदिर के पास ले आए। वहाँ पुजारी ने उन्हें पत्तों के दोनों में कड़ाहों में बना भोजन और फलों का उबला हुआ रस पीने को दिया। सचमुच लाजवाब स्वाद था।

फिर शाम ढलने से पहले वे अपने घर की तरफ़ रवाना हो गए।



सेटेलाइट में वायरस बम

आकाश और मार्था को लेकर बांड्रा और बोंग वापस पहुँचे तो म्याँमा वहीं मैदान में उन्हें मिली, मानो वह उन्हीं का इंतज़ार कर रही थी। सूरज छिपने वाला था। वे वहीं पत्थर की बेंच पर बैठ गए। म्याँमा उनसे उत्सव के अनुभव पूछने लगी।

उस उत्सव को देखकर मार्था कुछ ज़्यादा प्रभावित हुई थी। वही म्याँमा के सवालों का जवाब दे रही थी। म्याँमा ने बताया कि ''दरअसल यहाँ के मूल निवासी अग्निपूजक हैं। आग की पूजा करते हैं। तीन दिन बाद जब घाटी का उत्सव खत्म होता है, सभी लोग उत्सव की धूनी से पवित्र आग अपने साथ ले जाते हैं। यहाँ हर घर में आग जलाकर रखने का रिवाज है। अगर किसी के घर में कभी आग बुझ जाती है, तो उसे बड़ा अपशकुन माना जाता है। उसके लिए उस परिवार को अनुष्ठान कराना पड़ता है।''

''इन लोगों में अंधविश्वास कुछ ज़्यादा है।'' आकाश ने कहा।

''हाँ! बिलकुल! दरअसल अविकसित समाज में अंधविश्वास होते ही कुछ ज़्यादा हैं। हालाँकि जो कुछ तुम लोग देखकर आए हो, वह सब अंधविश्वास नहीं है। उसमें कुछ विज्ञान भी है। यह अलग बात है कि वे लोग उनका भी इस्तेमाल टोने-टोटके में करते हैं। जबकि वह उनका वर्षों से हासिल अनुभवों पर आधारित विज्ञान है। जिस रोगी को तुमने ठीक होते हुए देखा, वह किसी जादू-टोने का असर नहीं था। स्नायु विज्ञान का कोई विशेषज्ञ तुम्हें बता सकता है कि कोई नस खिंच जाने की वजह से उसकी कमर टेढ़ी हो गई होगी।'' म्याँमा ने आकाश की जिज्ञासा शांत करने की कोशिश की।

सूरज छिप गया था। अंधेरा उतरने लगा था। बातें करते-करते म्याँमा को भी इसका अहसास नहीं रह गया था। बांड्रा और बोंग ने चलने की इजाज़त चाही तो म्याँमा को लगा कि अब उन्हें भी घर लौटना चाहिए। उसने आकाश और मार्था से घर चलने को कहा। मार्था ने आसमान की तरफ़ देखा। वह हैरान रह गई। आकाश चलने को तैयार हो गया था, मगर मार्था ने उसका हाथ पकड़ कर रोक लिया। आसमान की तरफ़ इशारा करके कहा, "उन तारों को देखो जरा! कितने सुंदर लग रहे हैं!''



आकाश और मार्था रात को पहली बार यहाँ का खुला आसमान देख रहे थे। तारों का आकार खासा बड़ा था। उनकी चमक भी तेज़ थी। मगर वे काफ़ी दूर-दूर बिखरे थे। वे धरती के आसमान में दिखने वाले सघन तारों की तरह नहीं थे। आकाश तो उन तारों की गिनती करने में ही जुट गया। म्याँमा ने हँसते हुए कहा, "कुल सत्तावन हैं। इनमें इतनी रोशनी है कि यहाँ नीचे भरपूर उजाला रहता है। अलग से रोशनी न भी करें तो सामान्य रूप से चलने-फिरने में कोई परेशानी नहीं होती। सामने के पहाड़ों को गौर से देखो!"

"वाओ! कितना सुंदर लग रहा है!...आकाश थोड़ी देर और बैठते हैं यहाँ! इतनी खूबसूरत रात इससे पहले नहीं देखी!" चाँदनी में पहाड़ों की सुंदरता देखकर मार्था मुग्ध थी।

वह दृश्य आकाश को भी सुंदर लग रहा था, मगर मार्था को इस तरह यहाँ के लोगों के साथ घुलते-मिलते और यहाँ की सुंदरता पर मोहित होते देखकर उसे चिढ़-सी हुई। "शायद वापस लौटने में हमें ज़्यादा देर नहीं करनी चाहिए। यहाँ के नियम-कायदे का पालन करना चाहिए।" आकाश ने तर्क दिया।

"कोई बात नहीं! थोड़ी देर और बैठ सकते हैं! देख लेने दो इसे यहाँ का नज़ारा।" म्याँमा ने मार्था का साथ दिया।

अब आकाश को बैठने के अलावा कोई चारा न था। मगर उसके भीतर बेचैनी बढ़ने लगी थी। उसके दिमाग में एक बार फिर यहाँ से भाग निकलने की योजना कुलबुलाने लगी थी। दूसरी तरफ़ मार्था आसमान और पहाड़ों को मुग्ध भाव से निहारे जा रही थी।

आकाश ने म्याँमा से पूछा, "क्या आप लोगों को ऐसा नहीं लगता है कि हमें इस तरह खुला घूमने-फिरने की छूट नहीं देनी चाहिए?"

म्याँमा ने आकाश की आँखों में कुछ इस तरह देखा जैसे यह सवाल पूछकर उसने कोई गुस्ताखी की हो। फिर एकदम से हँसी, "क्यों?...भागना चाहते हो क्या यहाँ से?"

"न...न...नहीं! ऐसी बात नहीं है!...दरअसल आप हमें किडनैप करके यहाँ लाए हैं, इसलिए कहा!" आकाश हकलाने लगा था। जैसे म्याँमा ने उसकी चोरी पकड़ ली हो।

म्याँमा ने ज़ोर का ठहाका लगाया। अब मार्था का ध्यान भी आसमान और पहाड़ों की तरफ़ से हटकर म्याँमा और आकाश की तरफ़ हो गया। "फिलहाल तुम दोनों हमारे मेहमान हो! हमारा सिद्धांत है कि गिरफ़्त में आए हुए दुश्मन के साथ भी मेहमान की तरह व्यवहार करना चाहिए!... और जहाँ तक तुम्हें आज़ादी देने का सवाल है, चाहकर भी तुम यहाँ से भाग नहीं सकते हो!..."

"हमारे पास विकास के साधन ज़रूर कम हैं, मगर यहाँ के सिक्योरिटी सिस्टम का कोई मुकाबला नहीं है। जब तुम लोग यहाँ आए थे, तभी हमारे सेटेलाइट में तुम्हारा कोड दर्ज हो गया था। अब तुम इस ग्रह के किसी भी कोने में छिप जाओ, हम तुम्हें तलाश लेंगे। तुम्हारी हर गतिविधि पर हमारे सेटेलाइट की नज़र है। यही नहीं, अगर दूसरे किसी ग्रह का कोई जासूसी विमान यहाँ आने की कोशिश करे तो नहीं आ सकता। हमारा सेटेलाइट अकेला ऐसा सिक्योरिटी गार्ड है, जो सेना और पुलिस का काम एक साथ करता है। हमारे ग्रह पर बाहर से वही आदमी या वस्तु प्रवेश कर सकती है, जिसकी सेटेलाइट में कोडिंग है। हमारा सेटेलाइट किसी भी अपरिचित चीज़ को ऑटोमेटिक लेज़र बीम से छोटा और निष्क्रिय कर देता है। अगर लेज़र बीम का असर नहीं होता है, तो वायरस बम का हमला





शुरू कर देता है। यह सैकड़ों प्रकार के वायरस से मिलकर बना बम है, जो मशीनों और आदमी को निष्क्रिय कर देता है!...इसलिए हमें इस बात की चिंता बिलकुल नहीं है कि तुम लोग भाग सकते हो!''

म्याँमा की बातें सुनकर आकाश का दिमाग सुन्न-सा हो गया। वह सोच भी नहीं पा रहा था कि इतने मुलायम दिखने वाले लोगों के पास इतने कठोर हथियार भी हैं। वह डर के मारे चुप बैठा रहा। डरकर मार्था ने अपने दोनों हाथों से आकाश की बाईं बाँह पकड़ रखी थी।

“घबराओ नहीं! ये सब बातें मैंने तुम्हें डराने के मकसद से नहीं कही है! बिना किसी डर के हमारे साथ रहो! तुमसे कुछ बातें करनी हैं। कल फिर से सब लोग तुमसे बातें करेंगे। फिर फैसला होगा कि आगे क्या करना है!'' म्याँमा ने मुसकराते हुए कहा।

“आगे क्या करना है मतलब?'' मार्था ने धीमे स्वर में पूछा।

म्याँमा को एक बार फिर ज़ोर की हँसी आ गई। उसने मार्था के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा, “तुम लोगों की वापसी किस तरह होगी, यह तय करेंगे!''



खौफ़ में यादें

म्याँमा की बातें सुनकर आकाश और मार्था कुछ डर गए थे। घाटी के उत्सव का आनंद जैसे कपूर की तरह उड़ गया था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि आगे उनके साथ क्या होने वाला है। वे यहाँ से वापस जा भी पाएँगे या नहीं। इस कारण उन्होंने खाना भी बेमन से खाया।

कमरे में पहुँचकर दोनों अपने-अपने बिस्तर पर चुपचाप लेट गए। उन्होंने आपस में कोई भी बातचीत नहीं की। वे दोनों कुछ सोच रहे थे...अलग-अलग, अपने-अपने तरीके से!

"एक बार मुझे इनके सेटेलाइट कंट्रोल रूम में घुसने का मौका मिल जाए तो दिखा दूँ इनकी सुरक्षा व्यवस्था की पोल!" आकाश ने अपने आप से कहा।

मार्था का ध्यान भंग हुआ। "क्या कहा!" उसने चौंक कर पूछा।

"यही कि किसी तरह इनके सेटेलाइट कंट्रोल रूम में घुसने का मौका मिल जाए तो यहाँ से निकलने का रास्ता मैं निकाल सकता हूँ।" आकाश ने कहा।

"मगर पहुँचोगे कैसे वहाँ?"

"यही तो सोच रहा हूँ! जंगल-पहाड़ घूमने की छूट चाहे ये लोग जितनी भी दे रहे हों, अपने सेटेलाइट का कंट्रोल रूम थोड़े ही दिखाना चाहेंगे। अभी तक हम यह नहीं जान पाए हैं कि ये लोग रहते कहाँ और कैसे हैं। इनके घर-बार कैसे हैं। सेटेलाइट कंट्रोल रूम तक क्या ये पहुँचने देंगे!...मगर वही एक रास्ता बचा है, यहाँ से निकल भागने का। सोचने दो कि कैसे इनके कंट्रोल रूम में घुसना है!"

"मुझे तो डर लग रहा है, आकू! तुम कुछ खतरनाक प्लान कर रहे हो। कहीं इससे हमारी मुसीबतें और न बढ़ जाएँ।"

"जो होगा देखेंगे, मगर इस तरह हार मान जाना भी ठीक नहीं है!"

"अभी तक तो हमारे साथ इन लोगों का व्यवहार ठीक ही है। कल तक देख लेते हैं, क्या होता है। हमें तो इनके सवालों का साफ़-साफ़ जवाब देना चाहिए। झूठ बोलेंगे तो इनका शक बढ़ेगा। वैसे

भी हमने कोई अपराध तो किया नहीं है! इनके ग्रह पर आकर बस ज़रूर गए हैं, मगर कोई हमला करके तो हमने उसे हासिल नहीं किया है। एक वैज्ञानिक उपलब्धि के रूप में वह हमें मिला है।''

"तुम कहती हो, तो मान लेता हूँ। मगर हमें यहाँ से निकलने के उपायों पर सोचना बंद नहीं करना चाहिए। कल का मतलब सिर्फ़ कल!''



इस तरह आकाश के बात मान लेने पर मार्था खुशी से भर उठी। उसने सोचा कि म्याँमा के अपनी तकनीकी उपलब्धियों के बखान पर शायद आकाश कुछ ज़्यादा आक्रोश में आ गया था। धीरे-धीरे आक्रोश कम होगा, तो वह सहज हो जाएगा। इसलिए उसने बात को अलग दिशा में मोड़ दिया, "तुम्हें याद है आकू! एक बार जब तुम्हारी मम्मी सिक्योरिटी सिस्टम के बारे में हमें कुछ समझा रही थीं और किसी मामले में तुमने उन्हें टोक दिया था, तो वे नाराज़ हो गई थीं। अपना गुस्सा निकालने के लिए तुमने अगले दिन हमारी सेंट्रल यूनिट के हार्डवेयर में कुछ छेड़छाड़ कर दी थी!"

अपनी उस शरारत को याद करके आकाश मुसकरा पड़ा।

"पूरा सिस्टम ही बंद हो गया था। हमारे घरों का वायरस क्लीनर काम करना बंद कर चुका था। इसलिए सब लोग किसी बड़े हादसे के भय से घबरा गए थे। कुछ देर बाद बिजली भी चली गई थी। कम्युनिकेशन टॉवर ठप पड़ गया था। अफरातफरी मच गई थी! सब लोग जहाँ-तहाँ गड़बड़ी तलाशने में जुट गए थे! और तुम भोले बने चुपचाप सबको परेशान होते हुए देख रहे थे!" मार्था ने कहा।

"डर तो तुम भी गई थी! इसीलिए तो थोड़ी देर बाद ही तुमने कहा था, "तुम भी देखो न आकाश! कहाँ क्या गड़बड़ी हो सकती है? फिर तो सबका ध्यान मेरी तरफ़ हो गया था। मज़बूरी में मुझे वह गड़बड़ी ठीक करनी पड़ी थी।"

"क्या करती! कुछ बड़ा हादसा हो जाता तो!"

"होता कैसे हादसा! मैं जानता था कि कुछ नहीं होगा। मगर तुम जैसी डरपोक साथ हो, तो कुछ भी हो सकता है। मैंने वह गड़बड़ी तब ठीक तो कर दी थी, मगर फिर घंटे भर तक सबका उपदेश सुनना पड़ा था–फिर ऐसी बदमाशी मत करना बेटा। तुम्हारी मम्मी ने भी वही जुमला दुहरा दिया था। मेरी मम्मी ने तो घोषणा ही कर दी थी कि यह लड़का हाथ से निकल चुका है! इसका दिमाग गलत दिशा में काम करने लगा है! शुक्र है! दिमाग के किसी डॉक्टर के हवाले नहीं किया गया मुझे!" आकाश ने कुछ नाराज़गी जताते हुए कहा।

"यही तो गलती की उन लोगों ने! डॉक्टर के हवाले कर देते तो शायद अब तक कुछ बेहतर नतीज़े आ चुके होते!" मार्था ने चुटकी ली।

"जिसे सचमुच डॉक्टर को दिखाने की ज़रूरत है, उस पर तो अब तक ध्यान गया नहीं किसी का! लोग हर काबिल आदमी के दिमाग में नुक्स निकाल लेते हैं!" आकाश ने भी दहला फेंक दिया।

"जब आदमी का ऊपरी माला हिल जाए तो उसे अपने सिवा कोई काबिल भी तो नज़र नहीं आता! पता नहीं क्यों, इस बात को जानते हुए भी आंटी इतने समय तक नज़रअंदाज़ करती रहीं तुम्हारी परेशानी को!" मार्था कहाँ रुकने वाली थी।



"कोई बात नहीं! अपने हिले हुए ऊपरी माले का इस्तेमाल करके जब तुम्हें यहाँ से वापस ले चलूँगा, तब तुम अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर लेना!''

"आकू! फिर तुम उसी टॉपिक पर आ गए। कल का इंतज़ार करो! फिर सोचेंगे! इस तरह गुस्से में कोई काम करना ठीक नहीं होगा!...क्या पता इस कमरे में उन्होंने कोई ऐसा उपकरण लगा रखा हो, जिसके ज़रिये वे हमारी सारी बातें सुनते हों! बंद करो अब इस बारे में बातें करना!''

आकाश कुछ सतर्क हुआ। इस तरफ़ उसका ध्यान ही नहीं गया था। उसने कमरे के चारों तरफ़ नज़र दौड़ाकर देखने की कोशिश की कि कहीं सचमुच कोई ऐसा उपकरण तो नहीं लगा है!

''अब सो जाओ! सोचना बंद करो इस बारे में!'' मार्था ने कहा और ताली बजाकर कमरे की बत्ती बुझा दी।



दोस्ती की पेशकश

सुबह नाश्ते के समय म्याँमा के साथ फंकी, सूँसी और दो दूसरे लोग भी मौजूद थे। आकाश और मार्था ने अभिवादन किया। फंकी ने मुसकराते हुए आकाश के कंधे पर हाथ रखा और नाश्ते की टेबल की तरफ़ आगे बढ़ चले।

नाश्ता करते हुए फंकी ने बातें शुरू की, "म्याँमा ने यहाँ के बारे में तुम्हें बताया होगा! स्यांदू के बारे में भी! तुमने कल घूमकर यहाँ के वातावरण के बारे में भी अंदाज़ा लगा ही लिया होगा! कैसा लगा यहाँ आकर?"

"बहुत अच्छा लग रहा है! मगर अपनों की यादें तो आती ही हैं! फिर इस तरह संदिग्ध स्थिति में यहाँ लाए गए हैं तो कुछ शंकाएँ बराबर बनी रहती हैं!" आकाश ने कहा।

"तुम्हारा यहाँ आना एक इत्तफाक है। हम इरादतन लेकर नहीं आए हैं तुम्हें! मिस्टर सूँसी को तुम्हारे ऊपर शक हुआ, इसलिए तुम्हें उठा लाए। अगर हमारा इरादा तुम्हारे यहाँ के लोगों का अपहरण करना या उन्हें मारना होता तो यह काम हम बहुत पहले कर चुके होते।...खैर, अच्छा हुआ जो तुम यहाँ आए! कई बातें तुमसे पता चलीं। जैसा मिस्टर फ्योंदे के बारे में तुम लोगों ने बताया, क्या वैसी कोई और घटना घटी तुम्हारे यहाँ? जिस लैब से तुम्हें मिस्टर फ्योंदे मिले थे, वहाँ और कुछ मशीनें भी मिली होंगी! वे कहाँ हैं?" फंकी ने बात आगे बढ़ाई थी।

"चीज़ें तो कई मिली हैं वहाँ खुदाई के दौरान! मगर कोई जीवित आदमी या कोई दूसरा प्राणी नहीं मिल पाया। जो चीज़ें खुदाई में मिली थीं, वे सब हमारे यहाँ सुरक्षित रखी हुई हैं। यहाँ तक कि बहुत सारी जगहें भी सुरक्षित रखी गई हैं ताकि उनका अध्ययन किया जा सके। अभी ठीक से अध्ययन नहीं हो पाया है कि किस चीज़ का क्या इस्तेमाल होता था। यहाँ तक कि वह ताबूत भी रखा हुआ है, जिसमें

मिस्टर फ्योंदे हमें मिले थे! मिस्टर फ्योंदे का झुलसा हुआ शरीर भी हमारे यहाँ सुरक्षित है!...अभी कई जगहों पर अध्ययन चल रहा है। हो सकता है, कुछ और चीज़ें मिले!'' आकाश ने कहा।

“मिस्टर फ्योंदे ने एक और बहुत उपयोगी उपकरण तैयार किया था। हालाँकि उसे अंतिम रूप देना बाकी था, मगर वह लगभग तैयार था। अगर वह उपकरण मिल जाए तो कई समस्याएँ हम आसानी से हल कर सकते हैं। उस उपकरण के ज़रिये आदमी के दिमाग में दर्ज योजनाओं का पता लगाया जा सकता है। यहाँ तक कि किसी मृत आदमी के दिमाग को भी पढ़ा जा सकता है! सौ साल पहले मर चुके व्यक्ति के जीवाश्म से भी उस उपकरण के ज़रिये हम पता कर सकते हैं कि उसके दिमाग में क्या योजनाएँ थीं। मान लो कोई आदमी उपन्यास लिख रहा था, मगर उसे पूरा करने से पहले ही चल बसा तो उस उपकरण के ज़रिये हम जान सकते हैं कि उसके दिमाग में उपन्यास का अंतिम स्वरूप क्या था। इस तरह किसी अधूरी रह गई योजना या किसी प्रयोग को हम पूरा कर सकते हैं! यहाँ तक कि किसी मानसिक विकृति को भी ठीक करने में उस उपकरण की सहायता ली जा सकती है! किसी आदमी के दिमाग के सोचने-समझने की दिशा भी बदली जा सकती है। उस उपकरण के ज़रिये किसी अपराधी को रचनात्मक व्यक्ति बनाया जा सकता है!'' फंकी ने कहा।

“यह बता पाना तो हमारे लिए बहुत मुश्किल है कि जिस उपकरण के बारे में आप जानना चाहते हैं, उसका स्वरूप क्या है। जो चीज़ें हमें खुदाई से मिली हैं, उनमें वह है भी या नहीं। यह तो आप में से कोई व्यक्ति देखकर ही जान सकता है कि वह उपकरण वास्तव में है कौन सा!'' आकाश ने समझाने की कोशिश की।

तभी सूँसी ने बीच में टोका था, “चलो! अभी नाश्ता पूरा हो गया है! बाकी बातें हम उधर सोफे पर बैठकर कर सकते हैं!''

सभी लोग नाश्ते की टेबल से उठकर सोफे पर जाकर बैठ गए थे।

म्याँमा ने बात आगे बढ़ाई, “जब तुम लोग स्यांदू पर बसे और खुदाई में जीवाश्म तथा दूसरी चीज़ें मिलनी शुरू हुईं तो क्या तुम्हारे मन में यह नहीं आया कि पहले उस ग्रह की सभ्यता के बारे में अध्ययन करना चाहिए, फिर अपनी योजनाओं पर काम आगे बढ़ाना चाहिए?''

“शायद इसकी ज़रूरत नहीं समझी गई होगी!...क्योंकि सभ्यताओं के मिटने और बनने की कहानी हमारे लिए नई नहीं है।'' आकाश ने जवाब दिया।

“लेकिन जिस तरह तुम लोगों ने स्यांदू पर बसना और वहाँ विकास योजनाएँ चलानी शुरू की हैं, वह हमें पसंद नहीं है। यह स्थायी प्रक्रिया नहीं है!'' मिस्टर फंकी ने नए सिरे से बात शुरू की।

आकाश और मार्था उनके चेहरे की तरफ़ देखते रहे। वे उनकी इस बात का सही-सही अर्थ नहीं निकाल पाए।



गिलास से पानी का घूँट भरकर फंकी ने बात आगे बढ़ाई, “तुम लोगों ने जब स्यांदू पर आकर बसना शुरू किया, तब हमें बहुत तकलीफ़ हुई थी। जिस ग्रह से हमारा जन्म का रिश्ता रहा है, जहाँ हम पले-बढ़े, खेले-कूदे वह भले ही किसी हादसे की वजह से नष्ट हो गया, मगर उसपर किसी बाहरी



आदमी ने कब्ज़ा कर लिया तो हमें बहुत तकलीफ़ हुई। ऐसा नहीं है कि हमारे पास तुमसे लड़ने के संसाधन नहीं थे, मगर हमारी ताकत बहुत थोड़ी थी। फिर हम नहीं चाहते थे कि मारकाट से अपना ग्रह हासिल करें!...हासिल कर भी लेते तो उसे पहले जैसा बनाना हमारे लिए मुश्किल काम था! इसलिए

हम तुम लोगों पर नज़र रखते रहे! देखते रहे कि क्या कर रहे हो तुम लोग। योजनाएँ क्या हैं तुम्हारी! देखा कि तुम लोगों ने अंधेरे में डूब चुके उस ग्रह को रौशन कर दिया। हालाँकि जो तकनीक अपनाई वह हमारे लिए नई नहीं थी। वह कोई स्थायी समाधान भी नहीं है। खैर, उससे धीरे-धीरे वहाँ का वातावरण बदलना शुरू हुआ, यह हमारे लिए खुशी की बात है। यही सब देखकर हमने तुम लोगों की योजनाओं में बाधा डालना उचित नहीं समझा।...मगर अब देखते हैं कि जिस तरीके और तकनीक से तुम लोग स्यांदू पर जीवन लौटाने की कोशिश कर रहे हो, वह उसे दूसरे विनाश की तरफ़ ले जा सकता है! यही नहीं, उससे हमारे इस ग्रह की जलवायु पर भी प्रतिकूल असर पड़ना शुरू हो गया है!'' फंकी ने गहरी साँस भरी।

कमरे में थोड़ी देर चुप्पी पसरी रही।

मार्था ने चुप्पी तोड़ी, "आपकी बातों से लगता है कि तकनीकी रूप से आप लोग हमसे बहुत आगे हैं। मगर संसाधनों की कमी के चलते आपके हाथ बँधे हुए हैं! क्यों न आप और हम मिलकर काम करें! फिर आप हमारे साथ मिलकर अपनी खोई हुई विरासत भी कुछ हद तक खोज पाएँगे! वह हमारे लिए भी उपयोगी हो सकती है!''

"तुम लोगों की महत्त्वाकांक्षा को देखते हुए लगता नहीं है कि ऐसा कोई प्रयास संभव हो पाएगा!.. .तकनीक के ज़रिये महत्त्वाकांक्षा पूरी करने की कोशिश विनाशकारी ही साबित होगी!'' फंकी ने किसी दार्शनिक की तरह नतीज़े की घोषणा कर दी।

मगर आकाश ने तर्क दिया, "अगर आपका ऐसा मानना है, तो ज़रूर आपने कुछ अध्ययन किया होगा! तभी आप इस निष्कर्ष पर पहुँचे होंगे! फिर भी, एक बार मिल-बैठकर बातचीत करने में हर्ज़ नहीं होना चाहिए! हो सकता है, आपके सुझाव से हमें अपने तकनीकी प्रयोगों को सही दिशा देने में मदद मिले! यह तो इस बात का कोई समाधान नहीं है कि हम गलत तरीके से काम करते रहें और आप उसे देखकर यहाँ कुढ़ते रहें!''

"तुम्हारी बात बिलकुल सही है! मगर अभी तक तुम्हारे साथ बातचीत करने का कोई तरीका नहीं निकल पा रहा था। अगर तुम लोग चाहते हो, तो सबके साथ बातचीत की जा सकती है। हालाँकि हमारे पास तुमसे कहीं उन्नत तकनीक है, मगर भय है कि तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा हमें ही समाप्त न करने पर तुल जाए!...बातचीत की शर्त यह होगी कि तुम्हारे लोग हमारे ग्रह पर नहीं आएँगे। हम स्यांदू पर जाएँगे और वहीं तुम्हारी तकनीक के बारे में बातचीत करेंगे!'' फंकी ने कहा।

"इस पर हमारे यहाँ किसी को एतराज नहीं होना चाहिए!'' आकाश ने कहा।

"चलो, तुम्हारे प्रस्ताव पर विचार करेंगे। हो सकता है, अभी कुछ दिन और तुम्हें यहाँ रुकना पड़े। अभी तुम लोग म्याँमा के साथ जाकर बातें करो!'' फंकी ने बात समाप्त की।



चिंता की लकीरें

नाश्ते के बाद म्याँमा के साथ आकाश और मार्था कमरे से बाहर निकले तो म्याँमा ने कहा, "अगर तुम लोग चाहो तो कुछ देर बाहर मैदान में घूम या खेल सकते हो। थोड़ा-सा काम निपटाकर मैं तुम लोगों के पास आ जाऊँगी। नहीं तो तुम लोग अपने कमरे में जा सकते हो। मैं खाली होते ही तुम्हारे पास आ जाऊँगी।''

"यहीं बाहर हम लोग घूम लेंगे। यहाँ पहाड़ों और पेड़ों को देखना अच्छा लगता है! आप आराम से अपना काम निपटा लीजिए। हम आपको इधर ही मिल जाएँगे।'' मार्था ने कहा।

म्याँमा चली गई।

"मैं कह रही थी न कि इंतज़ार कर लो! देखो, नतीज़ा बेहतर ही आया है! अब हम जल्दी ही यहाँ से वापस जा सकेंगे!'' मार्था ने कहा। "तुम बेकार में घबरा जाते हो! ये लोग बेचारे भले लोग हैं!''

"मगर यह बात समझ में नहीं आई है कि ये लोग बार-बार हमारी महत्त्वाकांक्षा का ज़िक्र क्यों कर रहे थे! क्या मतलब था इनका? ये क्यों कह रहे थे कि जिस तरीके से हम विकास कर रहे हैं, वह टिकाऊ नहीं है, विनाशकारी है!'' आकाश ने चिंता ज़ाहिर की।

कुछ देर दोनों चुप रहे। फिर मार्था को कुछ सूझा, "ज़रूर ये लोग काफ़ी समय से हमारी गतिविधियों पर नज़र रख रहे हैं! इन्हें हमारे कामकाज के तरीके में कोई कमी नज़र आई होगी! तभी ये ऐसी बातें कर रहे हैं। हमें इसे नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए! हमें जानने की कोशिश करनी चाहिए कि आखिर इनके ऐसा कहने का मतलब क्या है!''

"अपने बारे में तो ये लोग बस उतनी ही जानकारी दे रहे हैं, जितना कि ये ज़रूरी समझते हैं। बाकी सारी चीज़ों को रहस्य बना रखा है। अभी तक हमने यह नहीं देखा-जाना कि ये लोग रहते



किस तरह हैं, इनके कामकाज का तरीका क्या है और क्या टेक्नोलॉजी इस्तेमाल करते हैं? कहते हैं कि इनके पास बहुत साधन नहीं हैं। सभ्यता के बिलकुल शुरुआती चरण में चल रहा है इनका जीवन और दूसरी तरफ़ सेटेलाइट से सिक्योरिटी चेक करते हैं! अज़ीब रहस्य बना रखा है!'' आकाश ने प्रतिक्रिया की। उसके बोलने में झुँझलाहट, घबराहट और अविश्वास के मिले-जुले भाव थे।

"अभी हमें यहाँ आए कुल तीन दिन हुए हैं। उसी में इन्होंने हमारे अनजान होने के बावजूद कितना कुछ तो दिखा-बता दिया है! उनके रहन-सहन के बारे में जानना चाहेंगे तो उस पर भी उन्हें शायद कोई एतराज़ नहीं होगा!...तुम बेवजह शक मत करो इनके ऊपर! देखो, हमने साझा प्रयास की बात की तो ये लोग कितने सहज तरीके से मान गए! तुम्हें धैर्य रखना चाहिए।'' मार्था ने समझाने की कोशिश की।

"मगर इस तरह रहस्यमयी बातें करने का मतलब क्या है?'' आकाश ने कहा।

"देखो, हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते हैं कि हमारे यहाँ अभी से कारोबारी होड़ शुरू हो चुकी है। जो लोग उस ग्रह की परिस्थितियाँ अनुकूल बनाने के मिशन पर आए थे, उनमें से भी कई लोग अपने निजी होटल-मोटल, रिसॉर्ट, शॉपिंग मॉल, कल-कारखाने आदि लगाने के लिए प्रोजेक्ट पास कराने में जुट गए हैं। इसके चलते वैज्ञानिकों के भीतर ही एक तरह की वैमनस्यता पनपने लगी है। हर महीने धरती से व्यापारियों का दल वहाँ आता है और जगह-ज़मीन देखकर चला जाता है! ज़ाहिर है, वे कारोबार शुरू करने के मकसद से आते हैं! उधर रूस और चीन भी अपनी परियोजनाएँ शुरू कर चुके हैं। इस तरह मुनाफ़ा कमाने की जो मारकाट धरती पर चल रही है, वह यहाँ भी शुरू हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं। उस ग्रह पर हम चाहे जितने पाक-साफ़ तरीके से विकास की कोशिश कर रहे हों, नियम-कायदे तो धरती पर ही तय हो रहे हैं। उसमें राजनेताओं के स्वार्थ क्या करवट ले लें, कह नहीं सकते! यह बड़ी बात नहीं है कि धरती की राजनीति यहाँ भी शुरू हो जाए! वह तो अभी से शुरू हो गई, दिखने भी लगी है! इसलिए अगर यहाँ के लोग हमारी महत्त्वाकांक्षाओं की बात कर रहे हैं, तो क्या पता वही सब देखकर कर रहे हों!" मार्था ने एक छोटा-मोटा भाषण ही दे डाला।

आकाश चुपचाप सुनता रहा और गहरी साँस लेकर वह चुप ही रहा।

"देखो, यह तो तुम भी जानते हो कि यूसिन का विकास हम क्यों कर रहे हैं। धरती पर प्राकृतिक संसाधन सिमटते गए हैं। लोग दूसरे ग्रहों पर संभावनाओं की तलाश में कब से थे। वह मिल गई है, तो सारे व्यापारी-कारोबारी इधर का रुख कर चुके हैं। इसलिए ठीक वही परिस्थितियाँ यूसिन पर भी पैदा होने की आशंका बन गई है, जो धरती पर हैं! फिर तुम यह भी जानते हो कि यूसिन की पारिस्थितिकी एक कृत्रिम व्यवस्था के तहत वापस लाई गई है। सूरज की रोशनी स्वाभाविक नहीं है, हमने उसकी व्यवस्था की है। इसलिए अगर ये लोग हमारे विकास को स्वाभाविक और स्थायी नहीं मान रहे हैं, तो वह बेवजह नहीं कहा जा सकता!" मार्था ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

"तो क्या करना चाहिए हमें?" आकाश ने पूछा।

"तुमने इनसे बेहतर व्यवस्था के बारे में बात की थी। ये उसके लिए बातचीत को तैयार भी हो गए हैं। इसलिए इंतज़ार करना चाहिए। हो सकता है, सचमुच इनके पास कोई ऐसी व्यवस्था हो, जो यूसिन के स्थायी विकास का रास्ता खोलती हो!...हमें इनसे और बातचीत करनी चाहिए। जानने की कोशिश करनी चाहिए कि क्या सचमुच ये लोग यूसिन पर चल रही गतिविधियों को उचित नहीं मानते हैं और इनसे बेहतर उपाय इनके पास हैं?" मार्था ने समझाया।

"तुम्हारी बात में दम है। चाहे जिन परिस्थितियों में हम यहाँ पहुँच गए हों, पर इसे एक बेहतर मौके के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए।" आकाश ने कहा।

"देखो, दम केवल मेरी बातों में ही नहीं, मुझमें भी है! यह अलग बात है कि तुम्हारे जैसे घामड़ से दोस्ती कर ली है!" आकाश को संयत देखकर मार्था खुश हुई और फिर शरारत पर उतर आई।

"देखो, हर किसी को लगता है कि वह दूसरे से ज़्यादा समझदार है। इसलिए अपने बारे में तुम्हारी गलतफहमी स्वाभाविक है। इसे बनाए रखने में कोई बुराई नहीं है।" आकाश कहाँ पीछे रहने वाला था।

"अच्छा, तो मैं गलतफहमी का शिकार हूँ!" मार्था को जैसे आकाश की बात का कोई जवाब नहीं सूझा। इसलिए उसने उसकी गरदन पर ज़ोर की चिकोटी काटते हुए कहा।

आकाश दर्द से चीख पड़ा, "अपना दम इस तरह तो न दिखाओ!"

अगर उन्हें म्याँमा अपने पास आती हुई नज़र न आती तो शायद उनकी नोकझोंक अभी और चलती। वे सहज भाव से बैठ गए।

म्याँमा ने आते ही पूछा, "बोर तो नहीं हुए?"

"बिलकुल नहीं! हम तो सोच रहे थे कि आपको आने में अभी और वक्त लगेगा।" मार्था ने कहा।

"चलो, कहीं घूमने चलते हैं!" म्याँमा ने कहा।

"कोई नई जगह दिखाएँ तो ठीक रहेगा, नहीं तो यहीं बैठते हैं कुछ देर और।" मार्था ने कहा।

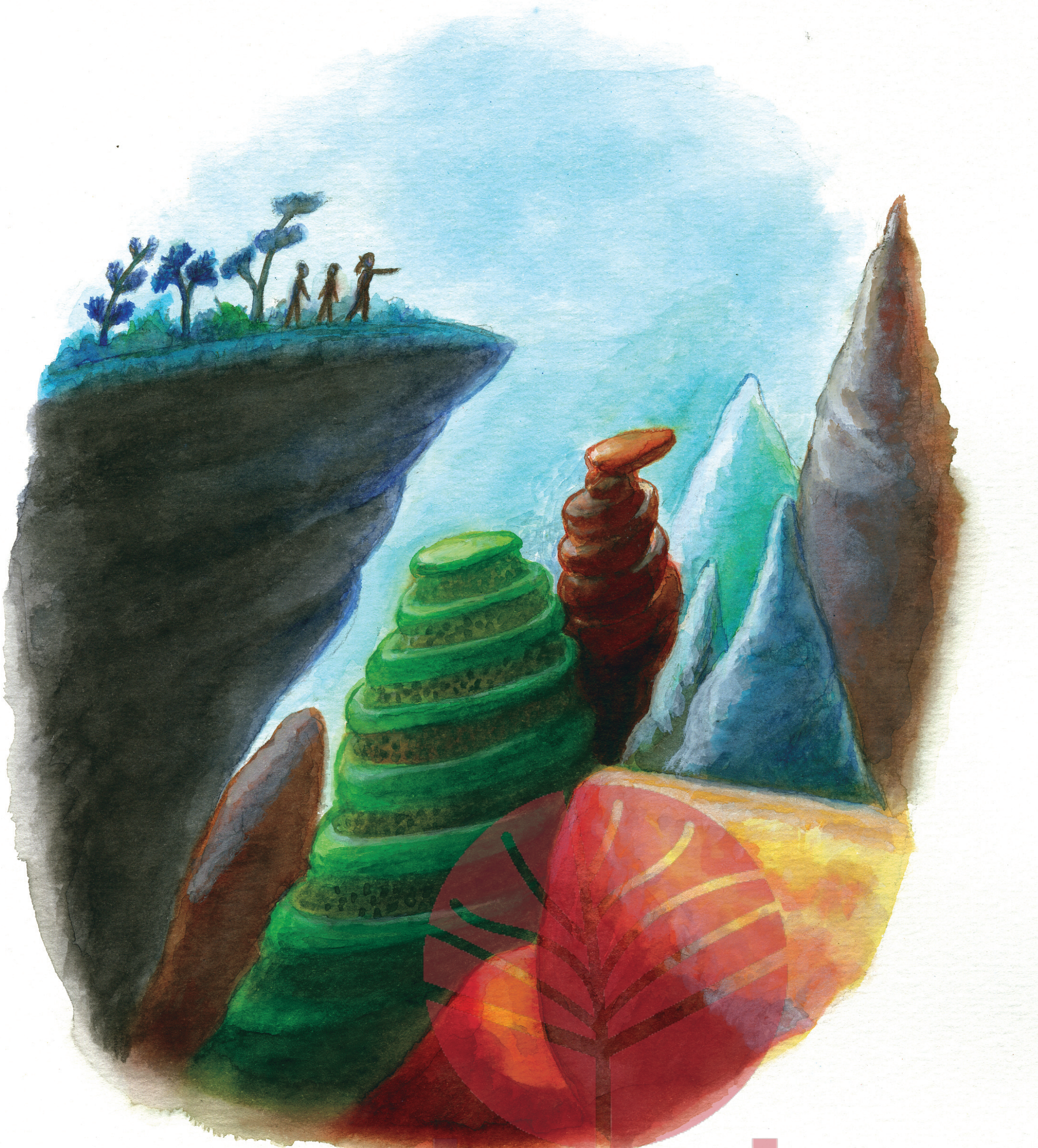
"उसके लिए तो तुम्हें बांड्रा और बोंग के साथ जाना होगा।" म्याँमा ने कहा।

"हमने तो आप लोगों के घर और दूसरी चीज़ें देखी ही नहीं! कोई बाज़ार होगा? कोई ऐसी जगह जहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम होते होंगे। कुछ कल-कारखाने, दफ़्तर, क्लब वगैरह।" आकाश ने बात को दूसरी दिशा दी।

म्याँमा कुछ देर चुप रही। फिर समझाया, "जिस जगह तुम्हें ठहराया गया है, वह हमारा क्लब ही है। यहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हो जाते हैं। बाज़ार वगैरह की ज़रूरत अभी हमें नहीं पड़ती। यहाँ की हर चीज़ पर हर किसी का हक है। किसी चीज़ का बँटवारा नहीं है। दफ़्तर जैसी चीज़ भी नहीं है। हर कोई अपने घर से काम करता है। ज़रूरत पड़ने पर सब क्लब में इकट्ठे हो जाते हैं। जहाँ तक घरों में तुम्हारे जाने की बात है, वहाँ जाने में कोई परेशानी नहीं है। हमारे घर तुम्हारी तरह के नहीं हैं। पहाड़ों की बनावट के साथ छेड़छाड़ किए बगैर गुफ़ानुमा घर बनाए गए हैं, जैसे यह क्लब हाउस है। क्या तुम मेरा घर देखना चाहोगे?"

"देख लेंगे! जानने की उत्सुकता है कि आप लोग रहते कैसे हैं। क्या आप लोगों की दिनचर्या और कामकाज का तरीका हमसे भिन्न है?" आकाश ने कहा।

"थोड़ा-बहुत तो अंतर होगा ही! मगर मुश्किल यह है कि मेरा घर यहाँ से दूर है और मेरे पास जो विमान है, उसमें केवल दो लोग जा सकते हैं। इसलिए दो बार मुझे आना-जाना पड़ेगा। अगर तुम चाहते हो, तो ऐसा करने में मुझे कोई परेशानी नहीं है।" म्याँमा ने कहा।



"घर देखने का काम फिलहाल रहने देते हैं। आप कल हमें अपने पुराने ग्रह के बारे में बताने और उसकी तस्वीरें दिखाने को कह रही थीं। अगर असुविधा न हो, तो उसे देखने में हमारी ज़्यादा दिलचस्पी है।'' मार्था ने कहा।

"बिलकुल! वह तो मैं तुम्हें अभी दिखा सकती हूँ। क्लब हाउस में ही!'' म्याँमा तैयार हो गई।



अंधे ग्रह की पुरानी तसवीरें

म्यॉंमा, आकाश और मार्था को जिस कमरे में ले गई; वह कुछ अजीब था। कोई खिड़की-दरवाज़ा नहीं! जिस तरफ़ से उन्होंने प्रवेश किया था, वह दरवाज़ा भी थोड़ा खिसक कर दीवार ही बन गया। दीवारों से रोशनी आ रही थी। जैसे चाँदनी रात में रोशनी होती है। बीच में कुछ कुर्सियाँ रखी हुई थीं। वे उनपर बैठ गए। म्यॉंमा के हाथ में रिमोटनुमा कोई चीज़ थी। उसपर उसने कुछ किया तो पूरा चौकोर कमरा गोलाकार हो गया।

अब म्यॉंमा ने समझाना शुरू किया, “जो तसवीरें हम देखने जा रहे हैं, वे हमारे पुराने ग्रह स्यांदू की हैं। इनमें तुम्हें हमारे इस ग्रह की गतिविधियों के बारे में भी कहीं-कहीं जानकारी मिल सकती है।”

“एक बात तो हम आपसे पूछना भूल ही गए थे। जिस ग्रह पर अभी हम हैं, इसका नाम क्या है?” मार्था ने पूछा।

“नांतू। यह नाम हमारा दिया हुआ है। बाद में यहाँ के मूल निवासियों से जानना चाहा कि वे इस ग्रह को क्या कहकर पुकारते हैं, तो पता चला कि उन्होंने इसे कोई नाम नहीं दिया है। उन्होंने अपने-अपने इलाकों का नाम तो रखा, मगर इस ग्रह का नाम रखने की उन्हें शायद सूझी ही नहीं। शायद उनमें अभी तक पूरे ग्रह के बारे में जानकारी हासिल करने की जिज्ञासा उत्पन्न नहीं हुई होगी।” म्यॉंमा ने बताया।

“यह भी विचित्र है!” आकाश ने कहा।

“अब तसवीरें चलाऊँ?” म्यॉंमा ने मुसकराते हुए पूछा।

“बिलकुल!” मार्था और आकाश ने एक साथ कहा।

तसवीरें शुरू हुईं तो आकाश और मार्था की हैरानी का ठिकाना न रहा। तसवीरें उस गोल कमरे की

सभी दीवारों पर चल रही थीं। उन्हें चारों तरफ़ से देखा जा सकता था। इसलिए ऐसा लग रहा था कि जैसे मार्था और आकाश तसवीरें न देख रहे हों, बल्कि साक्षात् उन इलाकों में चल-फिर रहे हों। न केवल आगे, बल्कि पीछे मुड़कर और अगल-बगल भी तसवीरों को देखा जा सकता था। लग रहा था कि आकाश और मार्था तसवीरों के बीच में खड़े हैं। जैसे तारामंडल में बैठकर आसमान को चारों तरफ़ से देखा जा सकता है, ठीक उसी तरह।

तसवीरें बिलकुल किसी सिनेमा की तरह शुरू हुईं। गोल आकार में खुलता हुआ स्यांदू या कहें यूसिन। पहले हरे-भरे जंगल, पहाड़ और नदियों-समुद्रों आदि की तसवीरें, फिर जनजातीय लोगों की बस्तियाँ और उसके बाद शहरों का जीवन। मगर शहर भी ऐसे नहीं कि धरती की तरह सघन और भीड़भाड़ वाले हों। बिलकुल खुला वातावरण। लोगों और गाड़ियों की रेलमपेल बिलकुल नहीं। ऊँची-ऊँची इमारतें ज़रूर बनी हुई थीं, मगर उनके बीच काफ़ी अंतर था। ऊपर उड़ते हुए गुब्बारे जैसे यान।

म्याँमा बीच-बीच में कुछ चीज़ों के बारे में बताती जा रही थी। उसी ने बताया कि ये गुब्बारेनुमा यान ही स्यांदू के लोगों के मुख्य वाहन थे। म्याँमा के अनुसार हालाँकि यह तकनीक उन लोगों के लिए बहुत पुरानी हो चुकी थी। लेज़र यानों का जमाना विकसित हो चुका था, मगर उसका इस्तेमाल कुछ ही लोग करते थे। लेज़र यान से व्यक्ति पलक झपकते ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाता था। म्याँमा ने बताया कि गुब्बारेनुमा यान ही नांतू ग्रह पर भी चलते हैं। उनमें जिस जगह जाना है, नक्शे पर उस जगह निशान लगा देने भर से यह यान व्यक्ति को वहाँ पहुँचा देता है। इन यानों का इस्तेमाल अकेले चलने या अधिकतम दो लोगों के चलने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसका इंजन यूरेनियम ईंधन से चालू होता है, फिर हवा और सूरज की रोशनी से ऊर्जा ग्रहण करने लगता है। इस तरह इसमें बहुत कम ऊर्जा की खपत होती है। इसके रखरखाव पर भी बहुत कम खर्च आता है।

फिर उस विशाल प्रयोगशाला की तसवीरें, जहाँ मिस्टर फ्योंदे ने ऐतिहासिक प्रयोग किए थे। उसमें तरह-तरह के उपकरण थे। उनमें से बहुत सारे उपकरणों को देखकर आकाश और मार्था के लिए अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि वे किस काम के लिए बनाए गए होंगे। मगर वे यह सब देखकर हैरान थे कि इस ग्रह पर रहने वाले तकनीकी रूप से पृथ्वी ग्रह के मुकाबले कई गुना अधिक उन्नत अवस्था में रह रहे थे। उनकी उपलब्धियों में उस ताबूत की तसवीर भी थी, जिसमें मिस्टर फ्योंदे यूसिन के वैज्ञानिक दल को मिले थे।

फिर स्यांदू यानी यूसिन पर खेतीबाड़ी, बाज़ार व्यवस्था, विभिन्न कारोबार से जुड़ी गतिविधियों की तसवीरें थीं। खेतों में काम करने के उपकरण भी पृथ्वी ग्रह या नए बस रहे यूसिन के उपकरणों से बिलकुल अलग थे। खेतों में निराई-गुड़ाई, सिंचाई, कटाई, भंडारण वगैरह के काम में ज़्यादातर





रोबोटनुमा मशीनें काम कर रही थीं। फैक्ट्रीयों में भी स्वचालित कंप्यूटरीकृत मशीनें थीं। बस, उनमें काम का नक्शा फीड कर दो, वे तय समय पर काम पूरा करके अपने आप बंद हो जाती थीं। ये तसवीरें देखते हुए आकाश और मार्था ने अंदाज़ा लगाया कि इस ग्रह पर रहने वाले लोग शारीरिक श्रम बहुत कम करते रहे होंगे।

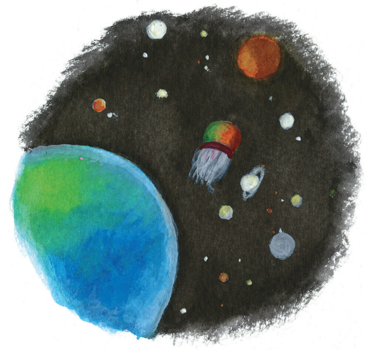
म्याँमा बता रही थी कि मिस्टर फंकी का मानना है कि स्यांदू पर अंधाधुंध विकास की गतिविधियों के चलते अनेक विकृतियाँ आने लगी थीं। वहाँ आदमी का सारा काम मशीनें करती थीं। उनपर रोक लगाने के बहुत उपाय किए गए, मगर तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी। कुदरत तो वहाँ भरपूर थी, मगर आदमी का उसके साथ तालमेल बिलकुल नहीं रह गया था। स्यांदू के विनाश के पीछे यह भी एक कारण था। इसलिए मिस्टर फंकी अंधाधुंध विकास के पक्ष में बिलकुल नहीं हैं। उनका मानना है कि विकास स्वाभाविक ढंग से और बुनियादी ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए हो। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ बिलकुल न हो। इसलिए इस ग्रह पर मशीनों का कम-से-कम इस्तेमाल किया जाता है। वाहनों और सिक्योरिटी से जुड़े कामों को छोड़ दें, तो ज़्यादातर काम मानव श्रम के ज़रिये किए जाते हैं।

फिर उन दिनों की तस्वीरें फिल्म में थीं, जब स्यांदू पर विनाश चल रहा था। स्यांदू सौरमंडल के दो ग्रह तेज़ गति से चलते हुए टकराए और आकर स्यांदू पर गिर पड़े थे। इससे स्यांदू अपनी कक्षा से थोड़ा हट गया था। उसके अंधेरे में डूब जाने का यही कारण था। फिर कई दिनों तक स्यांदू पर जगह-जगह भूकंप और रह-रहकर ज्वालामुखियों के फूटने का सिलसिला चलता रहा। पूरे स्यांदू की सभ्यता ऊपर से आकर टकराए ग्रहों के मलबे में दफ़न हो गई।

एक इतने सुंदर ग्रह के इस तरह नष्ट हो जाने की तसवीरें देखकर आकाश और मार्था उदास हो गए। उनमें एक अज़ीब तरह का भय भर गया।

तसवीरें दिखाने के बाद म्याँमा ने कहा, "अब अगर कहीं घूमना चाहो, तो ले चलूँ!" मगर आकाश और मार्था ने मना कर दिया। उन्होंने अपने कमरे में जाने की इच्छा जताई। म्याँमा उन्हें उनके कमरे में छोड़ कर लौट गई।

आकाश और मार्था स्यांदू, यानी यूसिन के बारे में देर तक बातें करते रहे, जब तक कि उन्हें रात के भोजन के लिए बुलावा नहीं आ गया।



वापसी के पल

सुबह आकाश और मार्था की नींद कुछ देर से खुली। वे रात को देर तक बातें करते रहे थे। वे जल्दी-जल्दी तैयार होकर नाश्ते के लिए पहुँचे। वहाँ म्याँमा के साथ मिस्टर फंकी, सूँसी आदि भी थे। आकाश और मार्था समझ गए कि आज भी नाश्ते के समय उनसे कुछ बातें की जाएँगी। आकाश ने सोचा, ''इनका यह अच्छा तरीका है कि नाश्ते के समय बातें करके दिन भर के काम के लिए फ़ुरसत पा लेते हैं। हम भी खाली, ये भी खाली!''

मिस्टर फंकी ने पिछले कल की तरह ही आकाश के कंधे पर हाथ रखकर स्वागत किया, "तो, कल कैसा लगा तुम्हें स्यांदू की पुरानी तसवीरें देखकर?''

"अच्छा तो नहीं कह सकता! बहुत विचित्र घटना थी वह! मगर संतोष की बात यह है कि उस ग्रह के कुछ लोग अभी बचे हुए हैं और नए सिरे से जीवन को देख और रच पा रहे हैं। हमारे यहाँ कई सभ्यताएँ नष्ट हो गईं, मगर उनके जीवन के बारे में ज़्यादातर अध्ययन एक तरह के कयास ही हैं। यहाँ कम-से-कम आप लोग साक्षात् गवाह तो हैं! उन पक्षों पर विचार तो कर पा रहे हैं कि जीवन के लिए क्या ज़रूरी है और क्या नहीं।'' आकाश ने कहा।

मिस्टर फंकी हँसे, "तुम दार्शनिक बनोगे एक दिन!''

"लेकिन इसकी सारी तैयारी वैज्ञानिक बनने की है!'' मार्था ने टोका।

"कोई बात नहीं! वैज्ञानिक दार्शनिक हो, तो और अच्छी बात है!...चलो, नाश्ता लेते हैं!'' मिस्टर फंकी ने कहा।

नाश्ता करते हुए आकाश के कल के प्रस्ताव पर बातें शुरू हुईं।

"हमने कल के तुम्हारे प्रस्ताव पर विचार किया। सबने तय किया कि तुम्हारे वैज्ञानिकों के साथ



मिलकर बातें करने में कोई हर्ज़ नहीं है। आखिर स्यांदू हमारी भी तो मातृभूमि है। उसे बचाना और दुबारा बसाना हमारा फर्ज़ है!'' मिस्टर फंकी ने कहा।

आकाश और मार्था चुप रहे। बस मुसकरा भर दिए। यह उनकी एक तरह से सहमति थी।

"मगर हमारी कुछ शर्तें होंगी। अगर तुम्हारे लोग उन्हें मानते हैं, तो काम आगे बढ़ाया जा सकता है।'' फंकी ने बात आगे बढ़ाई।

"क्या शर्तें हैं?'' आकाश को जिज्ञासा हुई।

"इस बारे में विस्तार से तो हम तुम्हारे वैज्ञानिकों से ही बात करेंगे। मगर मोटी बात इतनी है कि सिर्फ़ हम लोग स्यांदू पर जाएँगे और तुम्हारे यहाँ से कोई नांतू पर आने की कोशिश नहीं करेगा। घूमने-फिरने के मकसद से भी नहीं। जब तक हमें तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं हो जाता, नांतू पर तुम्हारा कोई भी आदमी नहीं आएगा। यहाँ के किसी भी मामले में तुम्हारे लोग किसी तरह की दखलअंदाज़ी नहीं करेंगे। केवल हम स्यांदू पर चल रहे विकास कार्यों में सुझाव देंगे।'' सूँसी ने समझाया।

"मुझे नहीं लगता, आप लोगों की इस शर्त को मानने में हमारे यहाँ किसी को एतराज होगा!'' मार्था ने कहा।

"पहले केवल मैं तुम्हें लेकर बातचीत के लिए स्यांदू पर जाऊँगा। अगर उन्हें हमारी शर्तें मंजूर होंगी और हमें लगेगा कि बातचीत आगे बढ़ाई जानी चाहिए, तभी हम कुछ और लोग वहाँ जाएँगे।...अगर तुम्हारे यहाँ किसी ने भी इसमें किसी भी तरह की चालबाजी करने की कोशिश की तो नतीज़ा ठीक नहीं होगा!'' सूँसी ने कहा।

फंकी ने हाथ के इशारे से सूँसी को तैश में बातें करने से रोका। "दरअसल, हमारी चिंता स्यांदू के अपनी मूल कक्षा से हट जाने को लेकर है। उसे उसकी जगह पर ले जाना हमारे लिए बड़ी चुनौती है। अगर ऐसा कर पाने में हमें कामयाबी मिल जाती है, तो स्थितियाँ अपने आप ठीक हो जाएँगी।'' फंकी ने आकाश और मार्था को समझाया।

"अगर दोनों ग्रहों के लोग मिलकर प्रयास करेंगे, तो कामयाबी मिल सकती है।'' आकाश ने कहा।

"यही सोचकर हमने तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार किया है।'' फंकी ने कहा।

"जिस ग्रह के बच्चों में इतनी गहरी तकनीकी समझ है, वहाँ के वैज्ञानिक निस्संदेह काबिल होंगे, यही सोच कर मिस्टर फंकी ने तुम्हारी बात को गंभीरता से लिया है।'' स्याँमा ने जैसे फंकी की अधूरी रह गई बात को मुसकराते हुए पूरा किया।

"खैर, कल मिस्टर सूँसी तुम्हें लेकर स्यांदू पर जाएँगे। हमारी तुमसे दोस्ती इस पर निर्भर करेगी कि वहाँ तुम अपने लोगों को हमारे मकसद के बारे में कितना और किस तरह समझा पाते हो और वे किस हद तक हमारी शर्तें मानने को तैयार होते हैं!'' फंकी ने कहा।



फिर सब बारी-बारी से उठ खड़े हुए। आकाश और मार्था ने भी अपनी नाश्ते की प्लेटें ले जाकर सिंक में डालीं और म्याँमा के साथ हो लिए। मिस्टर फंकी और सूँसी उन्हें हाथ हिलाकर यह कहते हुए कमरे से बाहर निकल गए कि कल मिलते हैं।

अगले दिन नाश्ते के बाद आकाश और मार्था अपने स्पेस सूट और जूते पहनकर तैयार हो गए। सूँसी ने अपनी कलाई घड़ी का बटन दबाकर उन्हें फिर से प्लास्टिक के गुड्डे-गुड़िया की तरह बना दिया और अपनी जैकेट की ऊपरी ज़ेबों में रख लिया। फिर स्पेस शटल में बैठ कर उड़ गया।

एजकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित